

आपनादि न देषने का ॥

मे	तेरा दुःख दुटेगा पाति मार ख ॥	॥	॥
ने	परमेश्वर के तरफ तेरा चित रहेंगा ॥	॥	॥
जे	कहुँ रो जस उर करोंगे तो काम होगा ॥	॥	॥
सं	संतोष करोंगे तेरा काम वनेगा ॥	॥	॥
ष	तुम कुंठा तुम य वहुत अछा है ष वदरि ॥	॥	॥
रा	तेरा ग्रह वहुत अछा है काम होगा ॥	॥	॥
ज	तुज कौं वडा दुःख होगा फेर दुटेगा ॥	॥	॥
र	तुज कौं सदा र मिलेगा ॥	॥	॥ ॥ ॥
जं	अकस्मात् दौलत मिलेगा ॥	॥	॥ ॥ ॥
व	तेरा काम होगा धन मिलेगा ॥	॥	॥ ॥ ॥
	तुज कौं वडा भय न स रहेंगा ॥	॥	॥ ॥ ॥ ॥
	तेरा दुःख दुटेगा ॥	॥	॥ ॥ ॥ ॥
व	तुज कौं जस मिलेगा ॥	॥	॥ ॥ ॥ ॥
ज	तेरा शत्रु काना स होगा ॥	॥	॥ ॥ ॥ ॥
न	तै अधर्म मत करो अछा होगा ॥	॥	॥ ॥ ॥
व	तुज कौं दौलत मिलने वाला है ॥	॥	॥ ॥ ॥

आशा सरकाथि

2403

ASHA ARCHIVES

अ	तेरा दिन अच्छा है तेरा काम होगा
य	तेरा ग़रुह बुरा है राज भय होगा-
रा	तेरा काम कुछ नहि होगा-
इ	तुज कौं सुखि होगा-
ला	तेरा मन लवना शहोगा घरापि है
हे	तुज कौं शत्रु का बाल लै गेगा-
व	तुज कौं किसि का सुख समत गन न परेगा
न	उः खयावैगा.
म	शत्रु का भय त्रास होगा.
ल	उः खसै छुटेगा.
किं	तेरा मन काम सुख घराव है.
ग	तैं अक समात शत्रु का फ़दा परेगा.
क	तेरा ज्य का भय त्रास छुटेगा.
फ़	तेरे काम नबनेगा.
गां	तुज कौं किसि पर फ़िदाद गन न परेगा.
आ	तुज कौं भेद सर्व मिलेगा.



मनलवका॥

सज

भले काम मे ते राम तल व सी हि होगा कि सि
का जु दा करे सै हरामी सैं चोरि सैं जु वा सैं जु ग
लि सैं ते रा काम बन गा.

सस

जो ते चाह ता है सो हो गा ले किं थो रे दिन पि छे तु छं
उख होगा उखे पि छे फरु दु सुख भी पावे गा.

गग

मेहनत करे सै ते राम तल व होगा काम दोरीं
से काम निकले गा.

जज	विनामेहनतनेतेरामतलवहोगा. छुसिऔने कवकनिसैतेरानित्यवढेगा॥ ॥ ॥
वव	तुज्कोउःखऔमिहनतभरहोगा. मतलवन होगा. तुफानभरतगावेगा॥ ॥ ॥ ॥
वय	मतलवतेराछुसिसैहोगा॥ ॥ ॥ ॥
४४	जौतेनेविचारकियाहैसोकरोटिलकराअछा नहि. करेसैतेरामतलवहोगा॥ ॥ ॥
४५	वडतफगअहोगा. रुहातफानतोहमतलगै गामतलवहोना. कठिनहैउःखभयपावेगा॥ ॥
४६	सहजमैतेराकामहोगालेकिनवडतठिल ककेहोगा. औरसुखभीपावे॥ ॥ ॥
नन	आधामतलवहोगाऔसर्वमतलवहोगानो भीआखिरकोभितेरेहात
तत	मतलवतेराहोगा. मतलवहोयपिढेकुडुउःख पावेगा॥ ॥
अॐ	मतलवतेराहोगादोस्तिसेहोगा॥ ॥ ॥

रु रु तेरा मतलब होय तो भी ऐसे हैं न होय तो भी ऐसे हैं तुझों घुसि न होगा ॥ ॥ ॥

क क ऊने कुं तेरा मतलब होगा लेकिन वडा कठिने वडा भीहन नरसै होगा ॥ ॥ ॥

अ अ मतलब का आश्रम रहै होना कठिने होगा तो आखिर दुख पावेगा होने सै तुझों नहि कुना भला ॥

आ आ फगत आश्रम रहै होना अछानहि होगा तो तरवार का घातु झों होगा औ उल्टा तो फान लगावेगा ॥



राजा का वर

अ ह राजा न सिव वर है रयत तेरा हक मै अछा है लेकिन उर तार हियो ॥ ॥ ॥ ॥

जद

राजा अछा है रैति औ तेरा हक मै अछा है ठहरै
गा भी सहि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कह

राजा न सिव वर है ले किं रय कुंभ लानहि करै
गा औ तुज्को भी अछा नहि और काज मै मिजाज नहि

हस

य राजा किसि का हक मै वरा है किसि का हक मै अ
छा है इन्साफ करै गारय को भी रघे गा ॥ ॥ ॥

हस

राजा वडा कसब घत है रै यत् औ किसि के हक मै
अछा नहि वे कु फू भी है ठहरै गा भी नहि ॥ ॥

हस

राजा न सिव वर है सब के हक मै अछा है का
य न रहै गा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हस

राजा का ग्रह वडत वरा है रयत कुं सुख न
हि देता है ते सै काय न रहन कठि नै ॥ ॥

लव

राजा का वचन न सिव वर है रै त से नै कि क
त है और राजा कौं ज स भी वडत है इ ल म
मै भी ष व द रि है अछा ॥ ॥ ॥ ॥

जिसे ठहरै वाला नहि ॥



लडात्रीका॥ ॥ ॥

हय तैहारैगालडात्रीविवदूतहोगा॥ ॥ ॥

लव तैडस्मनकेउपरफत्तपावैगा॥ ॥ ॥

कह तैलडात्रीमैहारैगाडस्मनफत्तपावैगा॥ ॥

अह तैजितनेकुंनोजितेगालेकिंआफूसैसलाहोगा॥ ॥

दज लडात्रीवदूतहोगाआधिरतैफत्तपावैगा॥

अज लडात्रीवदूतहोगालेकिंदस्मनैरानुपर
फत्तपावनेवालाहैषवदरिहो॥ ॥ ॥

नह लडता तो तै फत्थ पावै गा ले किं सश्वा हरूना चा
हिये पाति मारिष ॥ ॥ ॥ ॥

नस लडा जी औ हंगामा वडा होगा ले किं नूतै फत्थ
पावै गा ॥ ॥ ॥ ॥



रोजि देव नेका ॥ ॥

कन रोजी अछा होगा अकस्मात् दौलत मिले गाः
तेरा दिन वडत अछा है हड वडा वमत ॥ ॥

अह तेरा रोजी जैसा का ते सार हे गा न घटै न वडै
औरि कुटिल है आकाल तेरा दिन थोरा बुरा है ॥

यज तै वडा कलष मत है कुटु दिन तेरा रोजी न ले
गे गा ग्रह वडा वडा है कुटु दान कर डाल ॥ ॥

हअ तुज्जौंरोजिवडुत मिलेगा नित्य षु सिवटे
गाडुःखभीहुतेगा॥ ॥ ॥ ॥

हद नेरारोजिवडुत मिलेगा नैनीत्य षु सिहोगा॥

नव अमीनेरारोजी नडेगा जैसाथा नैसै है कभीः
घटेगा कभी वडेगा॥ ॥ ॥ ॥

लस तुज्जौरोजीन मिलेगा औभिनीकसान होगा नै
राग्रह वडुत बुझा है औवडा कम्बषत है॥ ॥

वह देरक के रोजी वडेगी षातिर्जार्ष भगवान् सै
उत्तरिहव॥ ॥ ॥ ॥ ॥



ब्याहाका॥

इहं ब्याहाकरो आपसैं वडा प्रीति होगा ॥ ॥

कस ब्याहा होगा प्रीति वि होगा ॥ ॥ ॥

अय मरडी लाय कहै सस ससैं दोस्ति होगा ॥ ॥

वह करो सैं न करण भला करण अछानहि करै
नो जीवै गानहि कि आप मरै गा कि सस सस मरेगा ॥

इअ इडनो का आय सैं वडा प्रीति होगा करो ॥ ॥

जज अवडत अछान वरा कभी वने गा कभी नहि ॥

तह नहि कर्ज होना भी कठि है आय सैं नित्य रुग
डा होगा कभी न वने गा ॥ ॥ ॥

लन मकर कर्ज सैं डः खया वै गा आय सैं रुग डा
नी त्त होगा ॥ ॥ ॥



कैदर साका ॥

ह न कुत जायगा पाप व डूत किया है उर का फल भुक्ता
है दान पुराण करो ॥ ॥ ॥ ॥

ज त कुकु डन हि डुटेगा ॥ ॥ ॥ ॥

ल ह न हि डुटेगा और भी स घति हो गा धर्म कर ॥ ॥

अ क और न हि डुटेगा ॥ ॥ ॥ ॥

व अ व डूत दे रि क कि डुटेगा ॥ ॥ ॥ ॥

स व न हि डुटेगा आज क ल्कार्ज कर्ते दे रि हो गा धर्म करे तो अच्छा है ॥

ह ज कुटने कुं डुटेगा ले कि व डूत कष्ट पावे गा तू का भौ भ
य है स निश्चर व ड है श निश्चर का दान कर डाला ॥ ॥

य व कुटने कुं व ड मु स किल है शस्त्र भय वि है मंगल व
रा है मंगल का दान कर डाला ॥ ॥ ॥ ॥



दह मिलेगा देरि कर्के सहज मै मिलेगा चोर कारेग
 डवला लवा पाव के ऊपर कुकुनि मानि है तेरा जा ॥

लह चोर मर्द है चोर कारंग लाल है ले को भाग याते
 राउ स्म जमै है मिल जाव डाका ठिन है ॥

कव चीज पावैगा चोर मर्द है जद रंदाहिने हात पर नीसाना है ॥

अव नहि पावैगा ॥ ॥ ॥ ॥

अय पावैगा तेरे घर के आदमि तेरा रोटि पानी पाने का पास है ॥

हज षवर पावैगा स्त्री ले चोर त्यामाल नहि पावै तेरे घर मै है ॥

वम चोर तेरा देन दास्ते राय डौ सि है पूर्व तरफ रहते है ना
 ट ७ रुष स्त्री मीलिके चोराया ॥ ॥

तन नहि पां जंगा तेरा लडका या तेरे लडके के मापि कर
 तै प्याकता है उसै ले चोराया है मुके ऊपर नीसाना है ॥



अस वेरामिअछाहोगा फेरवमिहोगा॥ ॥ ॥

हज मरैगानहि कुडुपिहरमत्करो॥ ॥ ॥

अव मरैगानहि कुडुदिन।वेरामिहोगा॥ ॥

कव किसिकानजरलगाहैयाभूतहै॥ ॥ ॥

नह जल्दिआरामहोगामरैगानहि॥ ॥ ॥

नज कुडुदिनवेरामीवडेगाआखिरआरामहोगामरैगानहि॥

दय जल्दिआरामहोगा॥ ॥ ॥ ॥

हज आरामनहिहोगाऔर्भिज्यासहोगाजीवेगानहिमरजाय॥



वह षरिदमत्करभागजायवेचनाहैंतोवेचडाल् ॥

नय षरिदमत्करभागजायगावेचनाहोयतोमुजाकानहि॥

तभ षरिदमत्करतकडुतअछाहैंदिनदिअछाहोगा॥

रह षरिदमत्करपूर्वदिमातरफभागैगा॥ ॥

कज षरिदमत्करवेचनाहोतोवेचडाल् ॥ ॥

अल षरिदअछाहैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वज षरिदभिअछानहिवेचनाभिअछानहि॥ ॥

हस षरिदकनअछानहिवेचनाहोतोवेचडाल् ॥



अस उस्मन तेरा जव दर्स्त है लेकिन ते उस्मन पर फत्त पावेगा॥

रु उस्मन तेरा वडल है लेकिन ते फत्त पावेगा॥ ॥

वअ घाति मरिष फत्ते तेरा नाका है॥ ॥ ॥

नज उस्मन तेरा अभिजव दर्स्त है ते पर न आवेगाले
किन ते वात शिरा होगा॥ ॥ ॥

तह ते उस्मन पर फत्ते भपावेगा उस्मन तेरे पर फत्त पावेगा॥

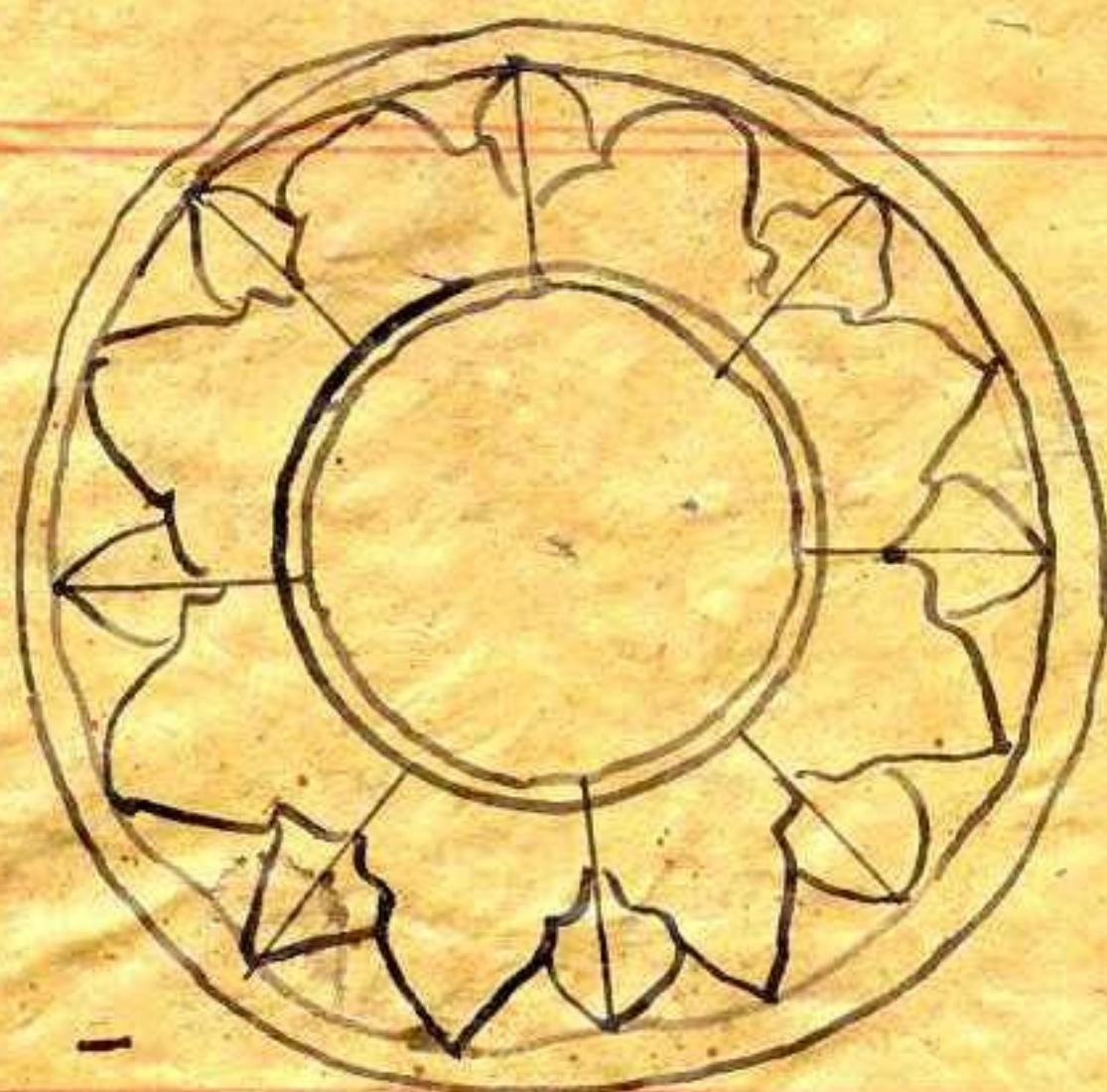
दअ तेरा उस्मन व शन शिव व है उस्मे त करार म
अछान होगा ईत्य ते सलुक करे॥ ॥ ॥

लज तेरा उस्मन पर फत्ते पावेगा॥ ॥ ॥

कहु संदेह नहि॥ ॥



नज	आवने जाने पछतो कहें योकि वहुत तड़हाल सैं आवैगा अहेवाल पछतो वराहाल है जिउने मर्ने पछल जा जीमे मरा गया ॥ ॥ ॥
दज	जिता है वहुत सुसमुदत पिछे आवैगा ॥ ॥
लज	वहुत सुस है मुदत पिछे आवैगा फे जायगा ॥
अक	जिउता है जल्दि आवैगा कुछु फिकर मकर ॥
यम	जिउने मर्ने का पछतो मर गया है अगर अहेवा- ल पछतो अछान हि है वराहाल है ॥ ॥ ॥
हह	जिने मर्ने का पछतो कहें योकि जिता है अहेवाल पछतो कहें योकि लजा जी के बात चीज के फिकर मैं वराहाल है आवने जाने का पछतो न आवैगा ॥
दअ	वहुत सुसि सैं है उखा फिकर ॥ ॥
वद	जिउता है वहुत थोरा दल मि



नेत्र दे राक्षस विभावि त धन मुख सहज ३ कर्ता ३	सिर भूत केड ७ तन	हस्त पाद ग्राम देवता वय जलधिर जान १२ आय ११
जंकिनी केड ४ काती वधु		५५ उरु उरु केड १० कर्म
पेट सत ५ त्रिकोरा ६ जलप्रेत मसान रिपु कंठ	७ जाया क्रुश केड वायु	८ देवि धर्म नाग त्रिकोरा पिठअंग जाय लि मृत्यु ग

भावन १३ उपदान २	जाति १	जगामर्ग १२ अविद्या ११	नामरूप १३ विकल २	षडभित्त १	वेदान १२ आत्मप्रश्न ११
विमान ४ १४	कार्तिक मास ७	सहकार १०	सहकार ४ १४	वैशाख मास ७	त्रिमान १०
वेदान ४ १४	षडभित्त १४	विकल ४ १४	अविद्या १४	जाति ४ १४	उपदान १४
जाति ४ १४	जगामर्ग १४	अविद्या १४	जगामर्ग १४	अविद्या १४	सहकार १४
उपदान ४ १४	मार्ग १४	विकल १०	त्रिमान ४ १४	उस १४	नामरूप १०
त्रिमान ४ १४	आत्मप्रश्न १४	नामरूप १४	भावन ४ १४	वेदान १४	षडभित्त १४
अविद्या १३	सहकार १	विकल १२	सहकार १३	विकल १	नामरूप १२
अति ४ १४	माघ १४	षडभित्त १०	जगामर्ग १४	फागुन १४	आत्मप्रश्न १०
भावन ४ १४	त्रिमान १४	आत्मप्रश्न १४	जाति ४ १४	उपदान १४	वेदान १४
उपदान १४	त्रिमान १४	वेदान १४	भावन १४	त्रिमान १४	त्रिमान १४

विकल १३ सहकार २	नामरूप १	षड्भाषीत १२ ११ आसाप्रस	षड्भाषीत १२ ११ नामरूप ३	आसाप्रस १	वेदान १२ ११
अविद्या ४	चैत्र	वेदान १०	विकल ४	ज्येष्ठ	उपदान १०
जराभरण १४ ५ ६ जातिरू	भावन ७	त्रिसान ८ ९ उपदान २०	सहकार १४ ५ ६ अविद्या	जराभरण ७	भावन ८ ९ जातिरू २०
वेदान १३ सहकार २	त्रिसान १	उपदान १२ ११ भावन	त्रिसान १३ २ वेदान ३	उपदान १	भावन १२ ११ जातिरू
आसाप्रस १४ ४	भावना	जातिरू १०	आसाप्रस १४ ४	भाद्रव	जराभरण १०
षड्भाषीत १४ ५ ६ नामरूप	विकल ७	अविद्या ८ ९ सहकार	षड्भाषीत १४ ५ ६ नामरूप	विकल ७	अविद्या ८ ९ सहकार २०
आसाप्रस १३ षड्भाषीत २	वेदान १	त्रिसान १२ ११ उपदान	उपदान २	भावन १	जातिरू १२ ११ जराभरण
नामरूप ४	असार	भावन १०	वेदान ४	आश्विन	अविद्या १०
विकल ५ १४ ६ सहकार	अविद्या ७	जातिरू ८ ९ जराभरण	आसाप्रस ५ ६ नामरूप	७	सहकार ८ ९ विकल

अथ स्वप्नप्रविचारः॥

अविद्या	स्वप्नादेशतः अशुभहो॥ ॥ ॥
महकार	स्वप्नादेशतः पाङ्गना आवैगा॥ ॥ ॥
विकल	स्वप्नादेशतः सेतो भोजन मिलेगा॥ ॥
कामरूप	स्वप्नादेशतः कोहि मरेगा॥ ॥ ॥
षडाश्रित	स्वप्नादेशतः आप्राप्रियारो वस्तु मरेगा॥
वेदान	स्वप्नादेशतः भलो स्वभावहो॥ ॥ ॥
त्रिसान	स्वप्नादेशतः गोठको वस्तु विगार होवैगा॥
भावन	स्वप्नादेशतः कोहि कलरुप ठावैगा॥ ॥
जातिक	स्वप्नादेशतः आप्रा उदकौ पाङ्गना आवै॥
उपदान	स्वप्नादेशतः कोहि मरेगा॥ ॥ ॥
जसामरता	स्वप्नादेशतः समाचार आवैगा॥ ॥

इति स्वप्नप्रविचारः॥ ॥

अथ कान वज्रा को विचार ॥ ॥

अविषा	दाहिनु वाजत जेहि मि होइ ॥ ॥ ॥
मावन	वाजत सुभोजन मिलेगा ॥ ॥ ॥
महकार	वाजत भलो होवै ॥ ॥ ॥ ॥
विकल	दाहिनु वात शुभ वाम अशुभ ॥ ॥ ॥
गमरूप	दाहिनु वाजत लाभ वाम अन्न मिलेगा ॥ ॥
वज्रान	दाहिनु वाजत समाचार मिलेगा वाम क लह मिलेगा ॥
गमपुष्प	दाहिनु वाजत कलह हो वाम सिद्ध होगा ॥
वेदान	उड़कान वाजत सुभ वात सुनेगा ॥ ॥
त्रिलोक	उड़कान वाजत कलह होगा कलह होवै ॥
उपदान	दाहिनु वाजत समाचार आवै वाम कलह होगा ॥
जातिक	दाहिनु वाजत लाभ वाम अशुभ वात आवैगा ॥
जगमरुत	दाहिनु अरोग्य वाम रोगी होला ॥ ॥

अथ वेराम विचार ॥

अविद्या दुःखतः परमदौरुहो कहर जीवैगा ॥ ॥

महकार दुःखतः पांच दिन मानि को होला ॥ ॥

नाम रूप दुःखतः चार दिन मानि को होला ॥ ॥

षडभित दुःखतः चार दिन मानि को होला ॥ ॥

मासाप्रमा दुःखतः आठ दिन मानि को होला ॥ ॥

वेदान दुःखतः १५ दिन मानि को होला ॥ ॥

त्रिसान दुःखतः २० दिन मानि को होला ॥ ॥

उपदान दुःखतः दिन २ मानि को होला ॥ ॥ ॥

मासाप्रमा दुःखतः दिन ८ मानि को होला ॥ ॥

मावन दुःखतः दिन ७ मानि को होला ॥ ॥

विकल दुःखतः दिन ७ मानि को होला ॥ ॥

दुःखतः दिन ४ मानि को होला ॥ ॥

अथ भै चाला को विचार ॥ ॥

अविद्या	भै चार होत राजा संग्रह करै गा ॥ ॥ ॥
महकार	भै चार होत वडुत संधी विग्रह होगा ॥ ॥
विकल	भै चार होत क्षयरोग अधोर होइ ॥ ॥
नामरूप	भै चार होत सवै मनुयल न वडावै भुयाकि वात सुनावै ॥ ॥ ॥
बडाजित	भै चालो होत मनुष्य वडुत मरण न ॥ ॥
आमाप्रम	भै चालो होत कलह होगा ॥ ॥ ॥
त्रिसान	भै चालो होत देशान्तर आवै गा ॥ ॥
उपदान	भै चालो होत राजा कलह होगा ॥ ॥ ॥
भावज	भै चालो होत अनिकाल हवै गा ॥ ॥ ॥
जातिक	भै चालो होत प्रविक्रि आवै गा ॥ ॥ ॥
जरा मरण	भै चालो होत वडुत मनुष्य मरे ॥ ॥
वेदान	भै चालो होत देस देस मा आर म ॥ ॥

अथ मुसाले वस्त्र का धाको विचार ॥

गहकार मुसाले वस्त्र काटत यर पक्षग्नि हो ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत कष्ट हवैगा ॥ ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत सहस्र मात्र हो ॥ ॥ ॥

नाम हय वस्त्र काटत नसि वस्तु हात परेगा ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत लाभ हवैगा ॥ ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत माहा लाभ हवैगा ॥ ॥

वदन वस्त्र काटत मन चिन्ता कार्य पूगैगा ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत आफ्ना कोहि मरेगा ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत गृह मा अशुभ करेगा ॥ ॥

भाव न वस्त्र काटत कलह हवैगा ॥ ॥ ॥

गमिरा वस्त्र काटत लाभ हवैगा ॥ ॥ ॥

अथ वस्त्र उद्या कोविचार ॥ ॥

भविष्या वस्त्र उद्य कट कहो ॥ ॥ ॥

सहकार वस्त्र उद्य सुषह वैगा ॥ ॥

विकल वस्त्र उद्य भलो ह वैगा ॥ ॥

षष्ठान्न वस्त्र उद्य कलह होइ ॥ ॥

आमाप्रश्न वस्त्र उद्य कलह उयजे ॥ ॥

नामरूप वस्त्र उद्य भसिद्धि वात कहो ॥ ॥

वेदान वस्त्र उद्य कार्य सिद्धि ह वैगा ॥ ॥

त्रिमान वस्त्र उद्य लाभ वैगा ॥ ॥

उपदान वस्त्र उद्य कट कह वैगा ॥ ॥

मानव वस्त्र उद्य जल मृत्यु प्रति होय ॥ ॥

जातिक वस्त्र उद्य तला भह वैगा ॥ ॥

न वस्त्र उद्य गदेषिय गा ॥ ॥

अथ बालवृजन्माकोविचारः ॥ ॥

अविद्या

जन्मोत्पत्तिदिन २ वर्ष १ मास ३ नमरत सु
खि हो चतुर हो आक्रासित कल गन्मा हो
परंता हो वर्ष ४० जूला ॥ ॥ ॥

सहकार

जन्मोत्पत्तिदिन २ मास ११ वर्ष १ जो नमर
त भाग्यमानि हो माहाकपुत हो मंत्रीयानि
हो १०० वर्ष जि उला ॥ ॥ ॥

विकल

जन्मोत्पत्तिदिन ५ मास ४ वर्ष १ नमर तस
वैकोमात्रु हो वर्ष ६४ जि उला ॥ ॥ ॥

नामहय

जन्मोत्पत्तिदिन ५ मास ४ वर्ष ४ जो नमर त
कुरा थोरा गन्मा हो भात थोरै खाना हो शत्रु
वहुनै हुनन् सुरे मदलिया हो माहु वरुणा हो १०० जि उला ॥

षडभित

जन्मोत्पत्तिदिन १० मास ११ वर्ष २ जो नमर
त निम्य दुखि हो ॥ ॥ ॥

जन्मोत्पत्ति दिन १० मास ११ वर्ष ११ जैन म
रत सिपालु होला ६६ जी वेला ॥ ॥ ॥

जन्मोत्पत्ति दिन ७ मास ३ वर्ष २ नमरत य
रमा प्रधान हो मंत्री हो वर्ष ६५ जी वेला ॥

जन्मोत्पत्ति दिन ११ मास ८ वर्ष १ नमरत रोगी
हो अवधूत हो कृपा हो वर्ष ६७ जी वेला ॥ ॥

जन्मोत्पत्ति दिन १३ मास २ वर्ष नमरत क
सैलित मारग न्या हो माहा कपूत विगार वर्ष ७० जी वेला ॥

जन्मोत्पत्ति दिन ५ मास २ वर्ष १० नमरत सर्वे
कोमा नु होला वर्ष ७४ जी वेला ॥ ॥ ॥

जन्मोत्पत्ति दिन २ मास ६ वर्ष ७ नमरत तरु
रा वै समारोगी होगी हो व्याधि हो परिया मा नु
वर्ष ६७ जी वेला ॥ ॥ ॥

जन्मोत्पत्ति दिन ० मास ० वर्ष नमरत रात्रि
त्रको दास हो सुचिका याग न्या हो वर्ष ६४ जी वेला ॥

अथ चोरि प्रश्न विचारः ॥

महकार

नास्ति वस्तु चोरितः पूर्व वाट आयच्छः निश्च को
चोरुः तैसै की स्त्री ले पुरा नु लिचा काली वद्या को
छः चोर २ भाइ च चल्द दिन ४ मा ७ ला ॥ ॥ ॥

वडाभित

नास्ति वस्तु चोरितः आग्रे चोरुः वडो पेठ छ पानी नेर
छः दुःखि मानी स को हात प सा को छः वडो आम निराषे

आसाप्रस

वस्तु चोरित यरनेर छ मानु के छः कालो छ पुल्पाई
पत्ताइ पाइ वला ॥

वेदान

वस्तु चोरित माफन गरमा छत का घरमा कालो छ
रपनी छ दिन २ मा होला ॥

त्रिसान

वस्तु चोरित पश्चिम दिसा आयच्छः यणी छः कल हगला

उपदान

वस्तु चोरित पश्चिम दिसा वाट आयच्छः तैसै कम
पुल्पाई यत्ताइ पाइ यला ॥ ॥ ॥

भावन

वस्तु चोरित पूर्व दिसा वाट आयच्छः कल साँ उदो
छः साना साना गो गछ चतुर छ भाइ सित कल ह होला

जातिक

वस्तु चोरित पीछे उडै छे जिग या सत व पाउला स ॥

जरा मरणा

वस्तु चोरित उत्तर दिसा वाट आयः मुड पुल्पा को
छः दोंत पति भाणा को छ दिन १५ मा पाउला स ॥ ॥

अविद्या

वस्तु चोरित धरोरा गा

छ दिन २ मा पाइ य किन पाई ॥

तव पाई ॥

पाइ यला ॥

पाइ यला ॥

अथन क्षत्र	अभि नी	एष वसु	अश्वेविता वा वा	अज राधा	धन रा	सतभि वा
धर्म नक्षत्र	भरणी	पुनर वसु	मया काति	ज्येष्ठा	श्रव न	पूर्वाभाद्र
कामन क्षत्र	कृत्ति का	आर डा	पूर्वफ लुगु	मूल	अभि जित	उत्तरभा द्र
मोक्षन त्रक्ष	राहि ली	मृग शिरा	उत्तर रफा गुप्ता	हस्ता	पूर्वा षाडा	उत्तरा षाडा

अथदिवि काचक्रोद्धारः

अथातस्सप्रवक्ष्यामि दीपचक्रसमुत्तमं ॥ लाभा
लाभजयस्तु यात्राकाले च कथ्यते ॥ ॥ अथ
धर्मानि कामानि मोक्षचैव दत्तचक्रं ॥ कथयामि न
संदेहोत्तराणां हितकाम्यया ॥ उत्तराणां च हितार्था
यभ्रणानां सुप्रकारकं म् ॥ चन्द्रसूर्याविचारैरा
ज्ञातव्यचक्रदीपकं ॥ उद्गोपचक्रगारेषा अष्ट
चैव तु तिर्यगा ॥ अष्टविंशतिको ह्यस्ति नक्षत्रा
नितदापयेत् ॥ अश्विनादि क्रमेणैव स व्यास
य कथमार्गयत् ॥ दातव्या कोष्टके नित्यं अष्ट

विंशति तारका ॥ अथ मार्गे गते सूर्य धर्मगे
 चन्द्रमा भवेत् ॥ अथ लाभो भवेत् तस्य वस्त्राना वि
 धिस्तथा ॥ १ ॥ अथ मार्गे दिनानाथे चन्द्रमा कामः
 संस्थिता ॥ सिद्धि कार्यानि न स्यन्ति अल्प कार्य विजा
 यते ॥ २ ॥ अथ मार्गे गते भातु हिम गौ मोक्षगे गृहे
 गजाश्वभूमिलाभं च शत्रुसम्यपरं सुखं ॥ ३ ॥
 अथ मार्गे गते द्वच हा मियात्रा भवेत् तदा ॥ उर्गमिं
 च समायात्रि चाशु भंत स्य जायते ॥ ४ ॥ धर्मगृह
 गते द्वच कार्यं च समधारणं ॥ न लाभो न च भंगश्च
 न हानि न च मर्थकं ॥ ५ ॥ धर्ममार्गे गते सूर्य
 अथ सिचा मृत भवेत् ॥ यात्रायां कुशलं तदस्ति
 द्विलाभं च अर्थके ॥ ६ ॥ आदित्य धर्ममार्गस्थे का
 मस्थे चन्द्रमा यदि ॥ अथ यात्रादि सियात्रा विग्र
 हस्य जनै सह ॥ ७ ॥ धर्ममार्गे गते सूर्य चन्द्र
 मा मोक्षगे भवेत् ॥ गजश्वलभं ते तत्र वस्त्ररत्ना
 दि कंतथा ॥ ८ ॥ कामगृहे गते सूर्य चन्द्र मोक्षग
 ते गृहे ॥ कुसलं च भवेत् यात्रा लाभस्त्वेव पुन पु
 न ॥ ९ ॥ कामगृहे गते सूर्य अर्थगे च निशा क
 रे ॥ आरोग्यं यस्य संयत्तं पुन वृद्धि गृहेषु च ॥ का

मगृहे स्थिते सूर्य धर्म ग्य च निशा करे ॥ लाभं हे
मार्थसंयन्त्रयात्रा कुसलदा भवेत् ॥ ५५ ॥ कामे
वसं स्थिते दावहां नियात्रा भवेत्तदा ॥ विग्रहं च
भवेत्तत्र तदा हि पुनरागम ॥ मोक्षमार्गे दिवना
थे अर्थे वहि मगौ स्थिते ॥ न कार्यं कुरुते तत्र स
र्वत्र निफलं भवेत् ॥ मोक्षमार्गे गते सूर्य हि म
गौ धर्मसंस्थिते ॥ लाभं च सिद्धि संयन्त्रो विज
यश्च सुषुप्रदा ॥ मोक्षमार्गे दिना नाथे हि मगौ
कामसंस्थिते ॥ भूमिचा दार्थहानी च रोणि
पीडा च जायते ॥ मोक्षमार्गे गते दं च भयं तत्र
विनिर्दिशेत् ॥ भंगो मृत्यु दिना शश्च जायते ना
त्र संशय ॥ क्रूर कार्यं विना शश्च भ्रंश भवे
गृहे ॥ क्रूरे च कुरुते कार्यं सौम्येति कुरुते धः
नं ॥ ॥ इति दीपिका चक्र समाप्तम् ॥

श्री गणेशाय नमः॥ ॥ सिवाल्लिखितमालो
 कसर्वविघ्नोपशान्तय॥ तस्यसंदर्शनादेव
 जायतेचभुभाभुभम्॥ १ ॥ नतिथिनचन
 क्षत्रंजोगकरांतथानभुलंयोगिनिगसिनहोएततमे
 गुणा॥ २ ॥ व्यतिपातेचसंक्रान्तौभडायामभुभेदि
 ने॥ सिवाल्लिखितमालोकसर्वविघ्नोपशान्तय॥ ३
 ॥ तत्रादौकथयिष्यामिमुहुर्त्तानिनुषोडसा॥ गुणत्रय
 विभागेनचालनियानहर्त्तिसम्॥ ४ ॥ अथमु
 हुर्त्तनाम्॥ रौ५ ततश्चेतमतपरंचमेत्र हयंचा
 र्वठ कंतथान्॥ जयदेव५ वैरोचन६ कंमुहुर्त्तैरुय
 तथाचाभीजितं६ क्रमेण५ एवाणं६ बालव७ चै
 वविभीषरो७ सुनन्दने१२ यम१३ सौम्यं१४
 तथाग्ययंभग१५ सावित्र१६ संनकं॥ ६ ॥
 तेफलं॥ ॥ रौ५ रौ५ करंतथामियमितेकार्य
 नकार्यंतथाश्वतेवैगजबंधनेनिगदितंश्री
 संभुनैवस्वयम् मैत्रेकार्यमनेधाचकथितं
 संध्यादिदानादिकम् दौषश्चावठकंतथानगा
 दतरस्तभप्रतिष्ठादिकम्॥ ७ ॥ कार्येवैजय
 देवमनिसदासर्वार्थसिद्धिप्रदेथदैरोचन

संज्ञकेनिगदितं पद्ममिषेकादिकम् ॥ कार्यैवै
नुरदेवनामनेसदाशास्त्रप्रयोगादिकं कार्यं च
मिजितेमुकुर्त्तकवरेगामप्रवेशादिकं ॥ ८ ॥
रावरोसाधयेद्वैरंजुद्धकार्यं च बालवैविभी
षणोभ्रमकार्यं नन्दनेयं च चलनम् ॥ ९ ॥
कार्यं यमेमारणाकर्मयज्ञसौम्यसभायासुयवै
सनं च ॥ स्त्रिसंगमं चापि भगोमुकुर्त्तसावित्रसं
ज्ञं ध्ययनं विदधात् ॥ १० ॥ इति फलं ॥
उदयरौद्रमादित्यस्वेतेश्वरमुकुर्त्तकम् ॥ ज
यदेवं भौमवारेनुरदेवं बुधेतथा ॥ ११ ॥
रावरांगुरुवारेचभार्गवेचविभीषनं ॥ सनौ
यममुकुर्त्तचयटिकाद्वयसनकं ॥ १२ ॥ गु
हसौमवुधौ सत्वभौमभार्गवयोरज ॥ सन्यकं
उद्धवारादौ तमोनादिचतुष्टयम् ॥ १३ ॥ सु
न्यनभयादिभीरेवर्णैर्विष्णुधनयुग्मगणाधि
पधै ॥ मृत्युस्तथापादयमादिवश्यश्रीविशुना
श्रामृतसर्वसिद्धि ॥ १४ ॥

मुकुटपरिशा ॥ ॥ अमृतचोदरे वैवविधौ
 आवर्तकतथा ॥ रेखात्रयंतथा कालेशु न्यशुन्य
 सिद्धिः ॥ फलम् ॥ शुभैर्नैव भवेत्
 र्यविष्णुमावर्तरे भवेत् ॥ मरणां कालरेखायां स
 वसिद्धिस्तथा मृते ॥ ॥ मास ॥ धनु कर्कटमी
 नानां पातसत्वे विनिर्दिशेत् ॥ तुला तीव्रपेषा
 नां पातं रजसि निश्चितं ॥ कन्या मिथुन सिंहना
 कुंभस्वमकरस्य च ॥ पातं तमसि वेलायां विषः
 रीतं शुभावह ॥ ॥ माघ फाल्गुन चैत्रे शुक्लैश्चापि
 आवरोतथा ॥ नवस्य मासिकारणां मुकुटैरेव
 नोच्यते ॥ ॥ रवौ नभके सर्वविष्णुराजौ गोवि
 दनामानभ आगमि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अथ सोऽमुकुटं लिख्यते ॥ ॥ छाडारेषाभया
 को अमृतमुकुटं नू आवर्तभया विष्णुमुकु
 टं नू ॥ तिनरेषाभया का कालमुकुटं नू ॥
 घालिभया का शुन्यमुकुटं नू ॥ अमृतमुकुटं
 मासवसिद्धिहो आवर्तकमुकुटं मा विष्णुहो
 कालमुकुटं मा मरणाहो शुन्यमुकुटं मा कार्य
 सिद्धिनहो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कर्त्तिक मासित्त पोष मास चतुर्मासि हि शुक्ल
षष्ठे ॥

रविवार दिन
रविवार रात्रि
सोमवार दिन
सोमवार रात्रि
मंगलवार दिन
मंगलवार रात्रि
बुधवार दिन
बुधवार रात्रि
गुरुवार दिन
गुरुवार रात्रि
शुक्रवार दिन
शुक्रवार रात्रि
निशिचरवार दिन
निशिचरवार रात्रि

आषाढश्रावणभाद्रपदआश्विनचतुर्मासादि
दिमुद्रनैलिख्यते ॥ ॥

रविवारदिन
रविवाररात्रि
सोमवारदिन
सोमवाररात्रि
मंगलवारदिन
मंगलवाररात्रि
बुधवारदिन
बुधवाररात्रि
बृहस्पतिवारदिन
बृहस्पतिवाररात्रि
शुक्रवारदिन
शुक्रवाररात्रि
शनिश्चरवारदिन
शनिश्चरवाररात्रि

१	१	१
२	२	२
३	३	३

- १११ यह कार्य चिन्ता वत मन संतोष हो कार्य श्रम होइ ॥
 ११२ अवहितो नाहिक नित्य करि न कार्य होइ ॥
 ११३ यह कार्य करिय तो सर्वथा श्रम होइ ॥
 ११४ यह कार्य करत सुख नाहि हो गा ॥
 ११५ यह कार्य करत भलो वर पाइय चिन्तान कर ॥
 ११६ यह कार्य करत कार्य नहि हो गां ॥
 ११७ यह तुमारे कार्य श्रम हो कार्य सर्वथा होइ ॥
 ११८ यह कार्य करत कर्म लागी बात पुछे कार्य नहि हो ॥
 ११९ यह कार्य सर्वथा हो निश्चय श्रम होइ ॥
 ११९ यह कार्य बडा कष्ट सै वहुत दिन कार्य होइ ॥
 ११२ यह कार्य मन चिन्ता वत जाइले सर्वथा कार्य होइ ॥
 ११३ यह कार्य करत विरोध हो सुख नाहि हो ॥
 २२१ यह कार्य करत पम आनन्द होइ ॥ ॥

यह

- २२२ यह कार्य करत थोरो लाभ होइ ॥
 २२३ यह कार्य करत वडतर रहउ होइ ॥
 २३१ यह कार्य यात्रा करत जय भलो हो सुख होइ ॥
 २३२ यह कार्य करत जंजाल हो उपद पावै ॥
 २३३ यह कार्य सुफल हो सुख धन पुत्र लाभ हो ॥
 ३११ यह कार्य करत संदेह हो सुख नाहि हो गा ॥
 ३१२ यह कार्य लाभ होइ सुख संतोष होइ ॥
 ३१३ यह कार्य वडत दुःख हो कार्य नहि हो गा ॥
 ३२१ यह कार्य लं व न है कार्य भरो हो गा ॥
 ३२२ यह कार्य जंजाल हो वडत यथा हो गा ॥
 ३२३ यह कार्य वेगी लाभ हो सर्वथा कार्य होइ ॥
 ३३१ यह कार्य कष्ट वडत हो उपद पावै ॥
 ३३२ यह कार्य करत वेगी फल हो कार्य भ्रम होइ ॥
 ३३३ यह कार्य करत धन धर्म होइ ॥ ॥

२ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ श्रीराम उवाच ॥ केनोपा
येन भगवत्कार्याणां हि शुभाशुभम् ॥ जीवरांजा
नकादीनां ज्ञायते तद्वदप्रभो ॥ १ ॥ पराशर
उवाच ॥ ॥ श्रीराम महाभाग लोकानां हितका
रकम् ॥ राममन्त्रमिति ख्यातं शुभाशुभफलप्रद
म् ॥ २ ॥ दात्रिंशच्चक्रसंज्ञं राममन्त्रमुद्ध
तम् ॥ चतुर्युताशीत्यधिकं कोट्यनित्रिंशतं कि
ल ॥ ३ ॥ अस्मार्थ ॥ ॥ कौन उवाच ॥ लेगरिकन
सकलकार्यको शुभाशुभरजन्माकाजीवादि को
जीवनादि वृत्ती जानिच्छ त्वो कुराहे भगवन् परा
सरमकन आजागर भनि श्रीराम चन्द्रजूवा
ठ सोधिया का परासर नामा ऋषि श्रीराम चन्द्रप्र
तिविंतिगर्ह ॥ हे राम ठुलो ऐश्वर्यभया कानिमि
कन प्राणि हरुला इहित हवस भनानिमित्त श्री
राममन्त्रिना उभयाको प्रख्यात शुभाशुभफलजा
निनायस्तो प्रश्नमक हंहु सुनु हवस ॥ वत्तीस
चक्रभयाको श्रीमन्मन्त्रनामभयाको तिनसय
चौराशीको ठामागाधियाको यस्तो प्रश्न छ त्वो प्रश्न
हे रवि वैले हातमा घालि भयापनिके हिय कमलाका

भयापनिबोली ॥ ॥ अथ मंत्र ॥ धरिणीधारणी
 सत्यवादिनी भर्तृवः स्वहा सत्यं वद वद ॥ ॥
 सप्तमंत्रलेदशफेरामंत्रलेसकैल्यासमाति
 नृणां उजरेषा पद्मपुत्रिरेषा गन्धर्ववाहूलेसे
 षगर्भजो वाकिरसो त्र्योचक्रकोट्यसंख्या जातु फे
 रिते हि अंकमा प्रश्नसंख्या अंकजो नृयकथय
 उत वत्तीसमन्दा अर्था लोभया ३२ वत्तीसैव
 यउ नुरचक्रसंख्याभयो ते स क्रमा वाहूलेसेष
 गर्दाजतिरहं ३३ त्रिकोट्यमाहे नुरजो लेषा
 कोट्यमोहं ॥ ॥ अथ प्रश्ननामानि ॥ गर्भः
 स्त्रीपुरुषोत्पत्तिप्रश्न १ वध्यानामपतेप्रश्न २
 विवाहचटनेप्रश्न ३ वास्तारभेप्रश्न ४ भुवि
 करणेप्रश्न ५ राज्यशुभाशुभेप्र ६ स्थानप्रा
 प्तिप्रश्न ७ विद्याप्राप्तिप्रश्न ८ नष्टद्वयला
 भप्रश्न ९ कर्त्तव्यसेवाप्रश्न १० आरक्षसेवा
 प्रश्न ११ स्थिराधिकारप्रश्न १२ राजकृतदुःख
 मोक्षप्रश्न १३ रिपुक्षयप्रश्न १४ वंदिसुक्तिप्र
 श्न १५ मनोगतप्रश्न १६ देवकार्यशुभाशुभ
 प्रश्न १७ रोगिनामकुसलाकुसलप्रश्न १८

षिकरेणाप्रश्न १९ प्रीतिसंधिग्रहेप्रश्न २० धनो
त्पत्तिप्रश्न २१ क्रयविक्रयप्रश्न २२ ऋणाकरेणा
प्रश्न २३ कलहेजयपराजयप्रश्न २४ ऋणादा
नेप्रश्न २५ तीर्थयात्राप्रश्न २६ नृपयात्राप्रश्न २७
यात्राप्रश्न २८ विदेश्यागमनप्रश्न २९ कार्याधि
प्रेषितागमनप्रश्न ३० आरक्षकार्यप्रश्न ३१
कर्त्तव्यकार्यप्रश्न ३२ ॥ इति प्रश्नाका ॥ ॥

२ वध्यायाक या विलं वेन प्रमानेव	१ विवाहयुक्ता नां वडुश्रम	कलहेन जय १२ अरादा उर्न फलद ११ तीर्थयात्रानद १० श्रुते
नकुदापिशि धमेष्वाती कायम	३	१२ अरादा उर्न फलद ११ तीर्थयात्रानद १० श्रुते
आरक्षेवि प्रोभा वि कार्यप्रे वित्तस्य जी व न संशय	४ विदेशस्थस्या गमनमासोप रिभाष्यती	८ नृपयात्रा यात्रा विलंवेन यां भुवभावि
३ अडुतवध वध्यायाक प्राप्ति याभविष्यति	१ वात्सारंभेभु भंभविष्यति	१२ अरादानेम धमफल तीर्थया ११ त्रायाजेन नृपयात्राशिष्यं १० भाविनी
कन्यापत्यं कु शलेन	४	१२ अरादानेम धमफल तीर्थया ११ त्रायाजेन नृपयात्राशिष्यं १० भाविनी
कालं वि लंयका यराय चिरान नं सिक्वती	५ कार्यार्थप्रषि नस्य नास्तिकु शलम्	८ यात्रायां वि विदे शस्थ प थिम तएव

वास्तारंभेन विवाहफलम् वाह्य दनं शिष्य मानि.	भूमि करणस हजउः खम्	तीर्थयात्राशि प्रभविष्य ति.
वध्यासुतानी ताभविष्यति.		नृपयात्रा यात्रायाश्च भं
पुनपत्नं भावि.	अत्यायसाका लेन मिद्धि भा विनी.	प्रवासिव प्रेषि सर्वसुख न कार्य माया ह कुशलि ति.
भूमि करणस वास्तारंभेन रभे माहा दुःखम्	राज्यस्य पूर्वव स्वास्थान संश य कार्य.	नृपयात्रा विलंबेन त्राम. धाम फलं.
विवाह करणसि प्रपदे भवि ता		विदेश गतस्या गमनं विलंबे न भावि.
वध्यानय नैव.	निर्विकृतं वकार्यं कर्त भविष्यति.	प्रेषितका यपिता उ भा. तमाया रथं ज ति. चिरान्तरं लदम्

राज्यस्य स्वा
भू स्थ उन्नतं
मिकर
रोमहाउ
खमः

स्थानभूदस्या
निविलंवेनस्था
नप्राप्तिः

यात्रायोपथा
मिलषितं
प्रवासि
नोकुशले

वास्तारंभेति
उःखमः

कायार्थस्वस्थाने
प्रतिचिरमाया
ती

विवाहय
दन्नंनभा
विभ्रम वंधा
य कानाचि
तोवधयति

पुमपत्यंनप्राप्ति
प्रभूतंभविष्य
तिचिरादेव

आरधेति
विभ्रतपा
कर्मव
स्तमनिय
मेवनसिद्धिते

उःखंस्थान
रा प्राप्तिः
यस्थ
चिरादेव
स्वास्थाः

नानाकेशभोग
वलेनविद्याल
भा

प्रवासिवत्स
राभ्यंतरस
मागमिष
नसमा
यति

भूमिकरगोह
नभूमौवापूर्व
वत्वास्थाः

आरधेतरायोभ
विष्यभूतप्राय
श्र

वास्तारंभे
मर्वसु
यमः अल
भूमिभूत
भूतप्रायोव
वाह

बंधावडवि
लंवेनसुता
चिता

नसिमेष
पुंशु
पत्यभ
विष्यती

अलघुभ्रमे न विद्याला स्थान चुतस्य नत्प्रप्तिः	नष्टप्राप्तिनास्ते वंशमो वर्ययेव नञ्	कार्यार्थिप थिसमाग दति विग्रह निष्पत्तिका र्यवेग
राज्येस्वास्थ्यं व षपर्यंत नैव भा विनसंशय		कर्तव्यसिद्धिसं दिग्धादृश्यति
भूमिकर तो दुःख परंपरा रभेव मेव	विवाहयटनेशी प्रसुषमाराव निकन्याप्राप्यते	इतमेव पुत्रोभ विद्यति भवित्री
नष्टद्वयसे श्री प्राप्तिर्न सुविद्या नितोभवि यति	कृतायां सेवायां वत्सरोपरिम धमफलम्	आरक्षमना यासेनसिद्धि क गमिष्यति तं वि सहसान सिध्यति
स्थानचुतस्य स्थानप्राप्तिप्र संगतेपि न		नपुंसकमपत्यं भविष्यति न संदेहः
राज्यस्थ नविष्य ति	वास्तवरभेसह जस्थभावि	वंशाया नापुत्र विवाह यटनं वि लयेन

कृपमारांसे फलदा नष्टद व्यप्राप्तिर चिरेणा	आरक्षसेवा चिरेणाफल भवनाम्	कर्तव्येप्रार भमारो फलं स्त्रीअ पत्यभावा
--	--	---

विद्यानितोन दृश्यते	११	वास्तारंभेसुख नभविष्यति
--	----	--

स्वस्थान प्राप्ति अस्वास्थ्य परमैश्वर्य भावि	भूमिकररो अस्वास्थ्य परमैश्वर्य भावि	भूमिररो राज्य महत्वा सेनताद स्थान शालुवेनउख
---	--	--

आरक्षसेवा कर्तव्य याफलं वसेवान फलदात्री	अधिकार चिरंस्थास्य तिनात्रसंदे	पुंशुपत्यं पकरं वध्या याप्रसूति नष्टस्यने
--	---	--

नष्टद्वयंअक समाकप्राप्ति ति	१२	विवाहपटनेक राचितवकुप न
--	----	---

विद्याभ्र मेरा स्थान प्राप्ति वित्री	राज्यस्थास्य मचिरेणाभा वि	वास्तारं भेनसु भूमि करोभू प्राप्तिन
---	--	--

अधिकारेचि रेस्थिति अधि रेस्थिति कारेवर्षच २ जुष्टयम् ३	तादृक्नभवि ष्यति राजकृत उःखम् १	वन्ध्याया ७ पाथैरप विवा न्यप्राप्ति हय दनं १३ वडुविलुवे ११ न
कर्तव्यसेवाप्रा रंभमात्रेन फ लदा	१३	वास्तारंभे सु खन भविष्यति
नष्टद्वयस्य ५ लाभो भवि ष्यति वादमा त्रेणाविद्या लाभः	स्थान प्राप्तिर्मास हयाभ्यन्तरे भ विष्यति	भूमिकर राज्य सोमहत्या सेने ताद स्थ ससुखेन उःखं
राजक्रोधे नि अधि भयम् कारेवर्ष चतुष्टयम् ३	अभिचारार्थ प्रजारी प्रवासो भविष्यति	विवाहय दने भ्रम वास्त यम् रंभे श्वि रेन सुखदा
आरभ्य सेवानका मदानत्र भ्रम एव	१४	भूमिकर गोप नादि सुखं भविष्यति
कृतसेवाफ लदा नष्टप्रा प्तिरेण	विद्यालाभका लांतरेण भावि ष्यति	राकुभं गं भवि स्थान प्राप्तिश्चि रेण

रिपोसकासा संक्षयं राज्यप्रसादोनकिं चित्	वंध्यामोक्षराव षभिन्तरेभवि षातिनसंदेह	वात्सारपूर्वय शयादुःख भूमिक रणोपरंदुःख
अधिकारेकिंचित् कालस्थिति	१५	राक्षेनेगस्तोतो उपनपुनस त
सेवामरणा फलं कर्तव्यसे वायाजेनफलं	नष्टद्वयप्रा पिनास्त्येव	स्थानाप्रिमा सासाभ्यंतरे विद्यालो मोप्रशमेरा
वंदिमोक्षोना स्ति भयं ना स्तिरिपुत	मजोगतमउ कमेवभदं शपते	भूमिकररोला भालाभोज स्त स्वास्थां नास्तिमय ति
राज्यप्रसादो भाविसत्यं	१६ १६	स्थानप्राप्तिविल न
स्थिराधिका रोद्वय पयं आधसे वायांसिप्रं फलम्	कर्तव्यसेवाना नादुःखदाप्राणा तेपिनफलदा	विद्यापरिश्र मेराभावि नष्टद्वय प्राप्तिरतिवि लम्बेन

म नोभिष्ट भावि वदिमो मोअचिररा ३	ननाटक फलं देवकार्यदृश्य १	राज्यस्वपूर्व वत्वाख्यं स्थानप्रप्ति विलंवेन ११
रिपुक्षयश्चि संभविता ४	१७	विद्यावकुविलं वेनतीकष्टे १० न
नृपक्रोधेभ यंनान्ति अधिकार चिरस्थास्यते ५	आरब्धसेवा यामनोगनका यसिद्धि ७	नष्टदयाप्रा कर्तव्य कदाचित् सेवामासह यनफलदा ८
देवकार्यपुर श्चररोज मनोगत फलं स्यमासेनश्र ३ भः ३	रोगिणांकुसलं चिरंभविष्यति १	स्थानप्रप्ति वर्षोपरि विलं वेनविरो धितोविद्या भाविनी ११
वदिवकु काले मुक्तोभविष्यति ४	१८	नष्टदयाप्रिवि लंवेनगह संनिधौ १०
रिपुक्षयोवि सेषतः राजनोन् पायितेमरणां ५	अधिकारेपु त्रयंतस्थिते ७	मेवाधरा भार मासानरे धसेवा साफल चिरंराफ ५ लदा

शेतिरांकुश लं मासाति देवका यदुर्लभं फलं २	कृषिमधोमाभा विनि १	विरोधितोवि यालाभं नष्टद्वय नप्राप्यते १२ ११
मनोगतस्पतिरे रामधमं फलं	१२	कर्तव्यसेवाप्रा प्तनेन फलदा १०
बंधनं वर्ष ५ पर्यंत भा वि रिपुरा तं वलि ६	राजक्रोधेपी अभविष्यति ७	सेवाफल दावर्षद धिकेष्ट येन मासपर्यंतं ८
कृषिसुभत रामाविनि शेतिकु शालम् २ ३	प्रितिसांप्रतं नवाजेन भवि ष्यति १	नष्टद्वयला भोविलं वेन सेवानफ लदानकार्य ११ १२
जपादिनां देवप्र सादोभावि ४	२०	आरक्षसेवापरा मसोपरिफ लदा १०
मनोगतस्प नतादृक् फलं वडाडुन उक्रोभावि ५	मत्रुराविना सोभविष्यति सहसैव ७	अधिकारो वर्षावधी राजक्रो धेभयं नास्ति ८

प्रीतिसंधिभवि ष्यति.	धनोत्पत्तिर्भ विष्यतिविलं वेन. १	सेवोयोगका र्यफलदं सेवा १२ मासपंच ११ केनफलदा.
कृषिसंपन्ना. ३		अधिकारश्चि रंस्थास्यतिन १० माम्
रोगिरोगान्मुक्तोभ विष्यति. ४	२१	
देवकार्यनश्र भदम्. ५	वक्षोमासद्वये नमृत्तिभविष्य ति	नृपको धोभय अचिरे दायी राशत्रुनाश
मनोगतस्य शिष्यफलं.	क्रयविक्रयो मध्यमफलं. १	नैवकार्य करिसेवा १२ अधिका ११ रोवर्षवधि
धनोत्पत्तिर्नहज प्रीतिसंभानि विशिष्टंभ विष्यति. ३		नृपकोधेचिंता १० नास्ति.
कृषिरतिवश्रभ दाभविष्यतिशिष्यं.	२२	
रोगिराणं होमा दिभिस्वा देवकार्य स्थां रंभमात्रेणासु खं.	मनोगतस्यमा सेनफलदम्	रिपुनाश घण्टासां वक्षोन त जीवि.

क्रतोदुःखसं धेनोत्पत्तिश्चिरम् पत्नीपर क	अराणां करणोश्च भंशोधनसक्ति नभूयात्	अधिकारश्चि रस्थायां द नृपरोष तादृक्चि नाम्
प्रीतिस्तु नदृ ते विग्रहयक	२३	रिपोर्मरणं नास्ति नृपराभवश्चनं
कृषिरमाद व्याचिरं रोगिड तं निगमय	देवकार्यशी प्रमेवफलं द श्यते	वंदितिरस्या मनोगत स्यति समधमंफलं
अराणो धनं चिरेण भा क्रयवि क्रयसुखं	कलहे जयन चित्राकार्या	नृपक्रोधम यनास्ति शत्रुश यशी
धनोत्पत्तिर्मह ति भवित्री	२४	वंदी मोक्षो न द श्यते सह सैव
प्रीतिर्न द श्यते कृषिभ डा भविष्यति	रोगिडु तमे वसुख भवि ष्यतीति रां	मनोगतस्य चिरेण मध्या देवकार्य फलम् न तादृगफलं

कलहे पराभ वयवः अनाते पुत्रपौत्रकं २	अरादाने मध्य मफलम् १	वर्षात्ररेरि पुक्षयः वज्र शिरामु लोभावा ११
क्रयविक्रयाभ्यां द्वयं सुखं च ४	२५	मनोगतस्य वि लंवेन फलम् १०
धनोत्पत्ति ५ रम्यदिने प्रतिय चेमासांतरे रा ६	७ कृषिस्तुतता दकफलदा ८	८ देवताका यकसं फलं रोगी षणमासे न सुखी ९
अरादानेला कलहे भसुखम् पराजयः ३	निर्विघ्नं तीर्थ करणां भविष्य ति चि १ रादेव २	वंदि वर्धन प्रकोभवि मनो गतस्य मध्याफल ११
अराशोधनं दु तमेव भवि ष्यति ४	२६	देवकार्यश्रमं भाविशीघ्र पुसाद १०
कृतकर्त्रेय द्वयमध्यं अतिउः फलं ५	७ प्रीतिस्तुत्यप देसमो भावि नी फलवती ८	९ रोगी राग मचिरा धिविना कुश सकलका दिना ११

अशा
हानेसंय
ति

६५.

विषयः

शपत्तेशीघ्रं.

परकायानि

४३

मरणाञ्ज

न ता ह स्ताः

आइतं



३ मित्रवत्

रसम्

निष्कला

खं नास्ति

विनाशिवन्

त्रिभुत प्रा

४१

यात्रासुखक रि नृपया त्राडुतमे वम् ३	विदेशशिष्य मागमराम् १	बाधिसांति नदृश्यते रुषिर्म १२ ११ धौफलदा
तीर्थयात्रामसत्र यातेभाविनी ४	२०	प्रीतिसुखदाडु तमेवभविष्य ति १०
मृगांस्थायि पौत्रानं कलहेज योभाविनी ५	मृगाकरणेन किंचिद्वाभ ७	धनोत्पत्ति नदृश्यते रुयवि रुयौफलं ६
विदेशस्थव रामासेनाग यात्रायां सुखनं ३	कार्यप्रेषितो मार्गेमृतयव १	रुषिसंप आस्थान् मृति १२ ११ उतंभवि ष्यति
नृपयात्राडुतमे वभविष्यति ४	३०	धनोत्पत्तिभूत १० प्राया
तीर्थयात्रा विलंबे न ५ दानंमम संपन्निकारि ६	कलहेजयस वदृश्यते ७	रुयविक्र योफलम मृगा करणेसु लनाश ६

कार्येष्वितरु रुतकार्ये विदेश वायां स्वसमाग २ मिष्यति ३	आरक्षकार्ये नर्विप्रभयंन वसिद्धि ७	प्रीतिसुख दा धनोत्प १२ ११ त्रिविलंवेन
यात्रायायाजेन सिद्धि ४	३२	क्रयविक्रयोसु खनैव
नृपयात्राय रामासात तीर्थया त्रायांयाजे नसिद्धि ५	७ ऋणादानेला भोनदृश्यति	६ २ ऋणाकर गोश्रभन कलहे जयव
आरक्षेन कार्येष्वसिद्धि विनोत्पाधि २ त ३	कार्यकर्तुर्न फलयकम् १	धनोत्पत्ति शिपुमे क्रयवि १२ ११ क्रयौश्रखं
विदेशस्थोमा सोतआयाति ४	३२	ऋणाशोधनं १० ३ विलंवेन
यात्रायां व्याधि नृपया त्राविलंवेन ५	७ तीर्थयात्रादुतं भविष्यति	६ २ कललेशी श्रजय ऋणादा नेलाभोदृश्यते

* अथ प्रवासि प्रश्न ॥ माथा हाथ दै रवि
 कहमंद पर सै गाल कि सोम आनन्द ॥ गला
 हात कि संगल मरि हृदया बुध कहे पर
 चारि बाम विह फै नुरी नहि आवै ॥ चामि
 भुक्क ओर भरि पावस ॥ जों यम निश्चर क
 त डुनहि जाय ॥ अगु खेमि तनु लाये न आ
 ये ॥ * अथ वर्ग प्रश्न ॥ गज गरुड समि
 पस्थं दूर स्थं नाग सिंहयो ॥ मै ठामां जारमा
 र्ग च स्वा नद दूर नदृश्यते ॥ * अन्य प्रका
 र प्रश्न ॥ तिथि वरागम नमानुष लेखव
 सप्तहर दूय आउ देषव ॥ यकति नय
 द्दपाया ॥ जधोजम यरा सै फिरयत वे ॥
 उइ चारी छव वाचय जव ॥ दिन दश भ
 रिजि वैतव ॥ सात सुन्य मरि पाया जव
 काल वसि भरि पावैतव ॥ * अथ का
 कशब्द विचार ॥ पाकरि पिय रि वेल वर
 पाषरि ॥ भिड पस ॥ वामे वोल कि दाहिने
 वोलुं पुरै मन कि आस ॥ * अन्य प्रकार ॥
 काग वचन सुनी नाय वद्धाओं ते रह आनि

मिलाय वपाया॥ घट् भाग कै जे रह सेष यन वै
जानव वचन वसेष॥ य कहिय कला भदर सो
वडु जै घर कोइ पाहुना आवै॥ त्रि जै गंजन बंधन
हो स चौथे मर कहै रन सो स पांचे भोजन मिठे यि
लावल छट मै कागहि काग बोलाव॥ ॥ अन्य प्र
कार प्रथम प्रहर्का॥ पुरुव धन मिलै आगने मि
त दक्षिण कहै वचन किहु हित॥ नै नृतन अर्थ
पश्चिम किहु लाभ॥ वायव कलह उत्तर सुख
पाव॥ मन इच्छा इसान हि भेल॥ पहिले प्रहर काग
कहि गेल॥ ॥ उतीय प्रहर को॥ पुरुव चित्रा
आगने उद भोजन॥ दक्षिण कहै संताप विमोच
न॥ नै रित अपरु वचन सुनाव॥ पश्चिम कडु
यन मेघ देषाया॥ वायव मित्र मिलै यहि वार॥
उत्तर दिसा अधिक सुपाव॥ मन संताप इसान
भेल दोसर प्रहर कागहि गेल॥ ॥ तृतीय
प्रहर का॥ लंका को न जौ वो लरो आरा चिंता छ
उह पिया हमार॥ दक्षिण दिसा वोले कंठा कर
ह काज पिया हो धन मत्ता॥ अगने को न जौ वो ल

बिसेषा करह काजपिया किछु देषा ॥ पूर्वदिशा
 बोले वारि किछु दिवा दरि कि उजी आरि ॥ ईशा
 ने कोरा बोले खरा इ कि मदेषि कं नरला इ ॥ उ
 त्तरदिशा बोले कजा करह काजपिया हो धन मत्ता
 कौन भंडार जो बोले नरो आरा जागत परह धन रष
 नारा ॥ गाम क पश्चिम दूर सर बोले ॥ करह काजपि
 या होय न अमोल ॥ आठो दिशा फिरि औ लडु स्वामि
 कत डुन पावत ठां उ गाम क पश्चिम जौ भीरी बोले
 तुरित छा उर गाम ॥ ॥ चतुर्थ प्रहर ॥ प्रथम वे
 त बोले ॥ सप्तवारा शुभल काज होय मंगल वारा न
 वगैषे न मंगल जो बोले वहे वयार कि गिरि धर जो
 ले ॥ कि धय धारि मानी परै कि परै आसी रोगी मरै
 उद्ध षे न जौ बोले सियारे सुख संपति आनन्द क
 र नारि ॥ गुरु क षे न जौ बोले व्यासा कि धन हो इ कि उ
 र वै आसा ॥ सुक कहते व दरि होय इच्छ वचन ले
 आवै कोइ सनिकाल के अन्तरे जंडु काग के भाष
 सत्य कह सगुनी आठ क ॥ ॥ अथ प्रश्न वि
 चार ॥ ॥ धनु मेष तुलानर कार्य विलंबित ॥

न करे ॥ कर्कटे ॥ अली ॥ मृत्युफलम् ॥ आनन्दी
 त होय वृषे कुम्भ के सरि ॥ नारिम नथ मीन ॥ अ
 भम् ॥ ॥ अन्य प्रकार ॥ तिथि हर संयुक्त
 र का वार मिश्री तम् ॥ सप्तभिश्च हरे ज्ञा गं से
 षं च फल मादि शेत् ॥ ॥ फलम् ॥ केतु स्थान
 स्थितं द्वाभां मागमनं भवेत् ॥ तृतीय द्वा
 मार्गे न चतुर्थे गृह माद सेत् ॥ पंचमे पुनरा
 तिषष्ठे बाधिसमागम ॥ अन्यं अन्य विजानीया
 देत्यधिक लक्षणम् ॥ ॥ अन्य प्रकार ॥ प्रश्ना
 शरं रुद्र युक्तं सप्तभिर्भागा माहरेत् ॥ अस्ति १ ना
 स्ति २ मृतो ३ लाभम् ४ सुखं ५ सौख्यं ६ च नि
 स्फलं ७ ॥ ॥ ॥

सर्व विद्या विचार को प्रश्ना ॥ ॥ प्रश्ना शरं रुद्र
 युक्तं तिथि वार समं युक्तं ॥ नवभिस्तु हरे ज्ञा गं
 सेषं तात्काल उच्यते ॥ नव एक पंच तो रिता व
 दंति अष्ट उतिया न च कार्य सिद्धि सप्त तृती
 या कथयंति वार्ता ॥ रसाश्च वेदाश्च विलं विने
 नः ॥ १ ॥ ॥

इ मरणास उ	ए सिद्धि	आ रिपुमर तां	इ अग्निभ य	ए वेत्साकं ग	आ अन्नपान
उ धननष्ट	काकप्र म १	अधागम न	उ शोक	काकप्र म २	आभाग तामनं
उपपुह वागमनं	जनस्य यननं प	तोयवृ ष्टि ने	उपजी विजनप्र सावाह प	गेहानप्र मारणां प	स्त्रीप्रसंग ने
गुरुदर्श नं	चौरभयं प	वहुधनं आ	वरभोज नं	शत्रुभयं प	कष्टं आ
नाम उ	काकप्र म ३	कलहं ह	इविशां उ	काकप्र म ४	निकार्याग म
वारणावं धनं	शत्रुक था प	सुद्यौर ने	सुगेहं वा	मानं प	विविधवां धनं
ग महाल क्ष्मी	११६ ब्रह्मायति प	३१११ कौमारि आ	शवर्जि पदि इ	प	श आ
११२ मोहेश्वरि उ	योगिनी चक्रम प	५११० वाराहि ह	र उ	वालश्र ल	ह ह
७११५ चरिण वा	६११४ इडायनी प	१२१२ वैष्णवि ने	च वा	म प	उ ने

ई	ए	आ	ई	ए	आ
निष्कलम्	उद्दिनम्	वर्षनम्	निष्कलं	अर्थला	प्रियद
				मं	कां
महात्रास	सिवाप्रथ	अर्थला	महात्रास	सिवादि	नृपम्
उ	म प्रहर	मं	उ	नीय	तु
रागोविरोधं	नीर्थसंय	वधुदर्श	रागोविरो	नृपम्	वातनृप
वा	नी	नं	वा	तु	प
निष्कलं	नित्यलाभ	धनला	निष्कलं	शिवं	माहाशि
ई	ए	आ	ई	ए	वा
माहाला	सिवाह	माहाला	उन्नता	सिवा	समवाता
मं	नीय	मं	मुं	थो	
रागोविप	गर्भेऽख	नृपते	आगम	सुहृत्	आरोपं
त	नं	नीति	नं	प	ने
निष्कलं	ग्रामह	मृत्पुहर	निष्कलं	भयं	महाभय
ई	ए	आ	ई	ए	आ
महात्रास	सिवायं	गोकुलह	महात्रा	सिवाय	अर्थहली
उ	चो	रणं	स	लो	द
वाय्रभयं	चौरभयं	सत्रभयं	मधमं	हस्तिभ	वह्निभ
वा	प	ने	वा	यं	ने

इ	ए	आ	इ	ए	आ
निष्कलम्	राजद र्शनं	केतुदर्श नं	निष्कलं	भयम्	माहाभयं
माहात्रास	सिवास ममो.	माहादृष्टि	माहात्रास उ	सिवाअ हमो.	रिपुहरणं इ
महिनास	श्रेष्ठवं धनुम्	विनासं	सुदस्यप ननं	निपतनं	क्षत्रीम रणं
महालाभं	मित्रद र्शनम्	सौख्य वात्रा	अग्निभयं	अग्निभ यम्	स्त्रीलाभ आ
कलहवात्रा	हिक्का १	रिपुभयं	शत्रुभयं	हिक्का २	महालाभ इ
रुधिरदर्श नं	सिद्धि वात्रा	श्रभवा त्रा	माहाला भवा	माहाभयं	मित्रदर्श नं
रुद्रागम नं	निशान भोजनं	मित्रद र्शनं	सुवर्ण प्राप्ति	सिद्धिका र्थ	अग्निभ यम्
रिपुभयम्	हिक्का ३	महावृ द्धि	नष्टधर्म	हिक्का ४	कलहवा त्रा
श्रमलाभं	माहाधनं	श्रभवा त्रा	वस्त्रला भवा	श्रभवात्रा	श्रमला भ

रामचन्द्र	सिता	लक्ष्मण	विभीषण
कुंभकरण	रावण	अंगद	सुग्रीव
केकै	भरत	अर्जुन	सर्प
हनुमन्	जान्घवाण	नारद	गुरु

* स्थाननासश्चरामेस्यात् शिताया दुःखमेव च ॥
 लक्ष्मणो कार्यसिद्धिस्तु सर्वलोको विभीषणो ॥
 मरणां कुंभकरणां च रावणो च धनक्षयं ॥ अंग
 ते च ध्रुवं राज्यं सुग्रीवं वधुददर्शनं ॥ केकैयाका
 र्यहानिश्च भरते च भीषे च न ॥ कल्याणमिन्द्र
 तनय कार्यनाशश्च श्रुतिनी ॥ हनुमा सर्वका
 र्येषु दीर्घमायुश्च जान्घवान् ॥ नारद कहंचैव
 गुप्तं च प्रियदर्शनं ॥ रामचक्रमिदं शास्त्रं देव
 रिषि कथितं पुरा ॥ प्रश्नार्थं सर्वलोकानां शुभं
 सर्वानसाधकं ॥ त्रिषु लोकेषु यत्सत्यं तत्सः
 तं मिह दर्शनं ॥ ॥ इति श्रीसकुनावली ॥
 शुभम् ॥ ॥

अथ यात्रा नक्षत्राणि ॥

श्रेष्ठ अ. पु. अ. ति. रे. ह. श्र. ध. ॥ ॥ श्रेष्ठ

म. म. रो. प. प. य. स्वा. चि. श. ज्ये. मू. ॥ ॥ म. म.

म. म. ह. अ. म. वि. उ. उ. उ. म. आ. ॥ ॥ अ. म.

मि. य. ६. १२. ८. १. १५. ४. २. १८. ३० ॥ ॥ अ. म.

इ	पू	आ		ना	अ	चं
उ		द		द		मि
वा	प	नै		ह	का	ज

योगयोगायनमः ॥ अचला पर्वता भारा जागा

नांच चला चलं ॥ दधिपात्रं अर्थलाभं च द्रुहो संताप

कारका ॥ काको विदेशागमनं जन्तुपंचमहाभय

मू ॥ सिंहविरजविमानं चोप्रियदर्शनिं ॥ ॥

पदसंगया कामानीस्प. आ उ न्यान आ उ न्या विचारहो

॥ ॥ पूर्वपरासमीपस्थो दूरस्थो उत्तरदक्षिणे नै

ऋत्ये ईशामार्गेन वायु आग्नेन चागमं सर्वप्रश्न

सर्वविचारजौनादिसातिरहेरिभन्यो उ सैदि

शाको विचारगरिभनुश्रममू ॥ ॥ ॥

•X अथ मेघवर्षाको धन नस्याको समाप्ताको रोगला
णाको प्रवासिको दिनसंख्या ॥ ॥ ॥

नक्षत्र	मेघ	नसत	समा	रोगला	प्रवालि	आव	व्यर
अ	१	१५	५	२१	७	१२	४५
भ	७	२५	२	२	१५	४५	२० १२०
ह	१	१५	०	५	१५	२०	१५० ५
रो	१०	१५	७	०	६०	४५	३० १४५
म	१२	३	३०	७	७	१५	१२० ४५
आ	२	४	५	०	४३	६	७० १०
पु	१४	३०	२	१०	१२	३५	१५ ३६
नि	३	३	२	१०	१०	१६	१२ ३६
अ	७	२५	०	४	४५	७०	१२० १६०
म	७	१	०	१०	६०	२०	१३५ १५
पु	१	०	०	७	७५	७१	१५ १२०
उ	१५	०	२	७	१५	२०	४० १०
ह	३६	३	०	०	२१	१०	५० ५
वि	१	०	१	५	६५	६०	७० २०
त्वा	३	१४	०	१५	५०	३५	३५ १६
वि	३	१	१३	५	७५	५५	२१ ५६
अ	१	०	३	०	५	२५	१६ ५६

43

ਸੋ	੩	੦	੭	੧੨	੬੫	੬੫	੨੦	੬੬
ਕ	੬	੨੦	੭	੧੨	੫੦	੪੫	੬੦	੩੬
ਗ	੩	੭	੦	੨	੪੫	੫	੨੬	੪੪
ਘ	੭	੦	੩੦	੨	੩੭	੨੫	੨੨	੩੬
ਙ	੩	੫	੨	੨੭	੪੦	੪੫	੫੨	੨੬
ਚ	੭	੨	੭	੩	੪੭	੩੫	੧੪੦	੧੨
ਛ	੧	੦	੩	੧੬	੪੨	੧੦	੧੨	੧੨
ਜ	੧੪	੨	੭	੫	੨੨	੫੪	੬੫	੧੩੩
ਝ	੧੪	੫	੭	੦	੨੨	੩੦	੩੬	੭੦
ਞ	੪	੧੦	੨	੧੨	੪੫	੬੦	੧੩੬	੧੬੦

× तिथिजरोन्यति लिख्यते ॥

प्र	१०	१६	२२	१२	अमृतदानम्
दि	१०	७	१५	२५	वस्त्रदानम्
तृ	१०	४५	१०	०	प्रवालदानम्
चौ	२१	५४	३६	३७	रक्तवस्त्रदानम्
पं	२१	२६	१६	३५	उग्धदानम्
ष	२	०	१५	२५	चित्रवस्त्रदानम्
स	५	७	१५	२	ताम्रदानम्
अ	१५	३०	१५	५	पीतवस्त्रदानम्
न	१२	३३	१९	०	रक्तवस्त्रदानम्
द	१०	१५	१२	२२	नीलवस्त्रदानम्
य	०	६	२६	०	कांचनदानम्
ठा	४	२५	०	१५	श्वेतवस्त्रदानम्
त्र	२	११	१६	२६	सुवर्णदानम्
च	०	०	०	०	पीतवस्त्रदानम्
पू	६०	११	२	३०	शैषदानम्
अ	०	२०	३	११	अमलदानम्

५

अथ नक्षत्रज्वरोत्पत्ति लिख्यते ॥

अ	१	१०	७	१३	अष्टधातुदानम्
भ	०	१०	०	७	लोहपत्रदानम्
क	२	१०	१५	१२	श्वेतवस्त्रदानम्
रो	३	०	३	३	सुवर्णादानम्
म	५	२	२२	२२	ताम्रपात्रदानम्
आ	०	५	३	१	गोदानं व्रतभोजनम्
उ	७	६	११	१५	लवणदानम्
ति	७	७	३०	१२	रौप्यमुद्रिकादानम्
अ	२	१०	०	१२	पीतवस्त्रगोदानम्
म	०	४	३०	३	रक्तवस्त्रगोदानम्
म	६०	५	१२	२	सुवर्णादानम्
उ	१०	१४	७	०	कपिलागोदानम्
ह	०	७	२४	२५	व्रतभोजनगोदानं
वि	१६	२०	११	११	पीतवस्त्रदानम्
स्वा	६०	१७	७	९	ब्राह्मणक्षीरभोजनं
वि	२०	३०	११	१२	रक्तवस्त्रगोदानम्
अ	१०	७	१६	१६	वृषभगोदानम्
जे	१५	१५	१३	०	रौप्यसुवर्णादानम्

मू	२०	१५	१५	१६	ब्रह्मभोजनं.
पू	१२	१३	१३	०	कृष्णगोदानं.
उ	२०	१५	१५	३६	सुवर्णदानं.
श्र	९	२०	१०	१६	गुडदानं.
ध	५	१०	०	३	कृष्णगोदानं.
का	१०	५५	२२	१६	लोहक्षीरदानं.
पू	०	५६	६०	३	रक्तवस्त्रक्षीरदानं.
उ	११	२३	२०	१६	कृष्णवस्त्रक्षीरदानं.
रे	३४	११	१६	६	ब्राह्मणक्षीरभोजनं.

अथ वारज्वरोत्पत्तिलिखाने ॥ ॥

र	१०	१	९	५	रक्तवस्त्रदानं.
च	३	१३	१०	१६	श्वेतवस्त्रदानं.
भो	५	७	१९	२०	प्रवालदानं.
उ	४	६	८	७	कांचनदानं.
वृ	१	४	१०	२०	पीतवस्त्रदानं.
श्र	६	१६	५	९	श्वेतवस्त्रदानं.
श	३	१९	२५	२०	कृष्णवस्त्रदानं.

पौ	मा	फा	चै	वै	जे	आ	भा	भ	आ	का	म
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

सवध त्रीणा फलम् ॥ त्रिजत्रयोदसियेक फ
 लम् ॥ चौथि चतुर्दसि पंचमि पूर्णिमा षष्ठी
 अमावास्या येक फलम् ॥ ॥ नदि सासूलं
 न काल योगं न चन्द्र विरुद्धं न दाक वचनं
 न यम द्यं न राउ चक्रं न ज्ञान ण स न वा
 र डंड न योगिनी चक्र ॥ ॥ इति सर्व
 मेरि शिव पत्रिका हेन सर्व कर्म शुभं
 ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

X सुखसितआ १ मनकिहोहोइ राजफलुषा मध्यमपावे
 कलहउपजे १ मित्रमिलाव २ सुखपरआ ३ सर्वसुखपावे
 अर्थलाभ १ राजप्रसादपावे सुखसितय ३ विनासदेपावे
 कलहउपजे १ भलानाहोवै २ शंखाउपजे ३ भलानाहोइ
 अर्थलाभ १ पंथमृत्युहो २ भलानाहो ३ सुखसितपरआ
 कलहउपजे १ संकष्टउपजे २ उपडउपजे ३ अर्थलाभहो
 श्रीसौभाग्यरा १ अर्थलाभ २ सर्वसुखपा ३ किहुलाभहो
 ० ० ० १ ० ० ० २ ० ० ० ३ ० ० ०
 अर्थलाभ १ भलाहोइ २ मृत्युउपजे ३ सुखसितयआ
 श्रीसौभाग्यपा १ कलहउप २ पंथमृत्यु ३ सुखसितयआ
 पंथमृत्यु १ श्रीसौलीयर २ कलहउपजे ३ सुखसितयआ
 पंथमृत्युहो १ अर्थलाभ २ मित्रवादिता ३ जैसाजातैसा

इ	प	आ
उ	दिशा	र
वा	स्वामि	म
व	प	नै
	श	ए

* अंगस्युक्तिभयाकोविचारः ॥ अंगस्युक्ति
 दक्षभागेनराणां वामे स्यात्सुंदरीणां शुभाय ॥ स
 र्वेषां स्यात् मलशिर्षे सुखायैव स्नातुं न द
 यात् स्वसक्त्याः ॥ मस्तकपुरतः भूमिता भवो
 राजप्रसादपावैः ॥ ललाटपुरतः स्थानवृद्धि हो ॥ ना
 सिकापुरतः प्रियसंग हो ॥ वामनेत्रपुरतः मिः
 त्रहंनि हो ॥ दाहीनेत्रपुरतः धनलाभ हो ॥ दा
 हिनुनाकपुरतः चतुष्पदलाभ हो ॥ दाहिनुद
 पुरतः धनप्राप्ति हो ॥ वामुदपुरतः अनाम
 गमन हो ॥ पृष्ठअंगपुरतः धनलाभसंग्रामला
 भ हो ॥ कण्ठपुरतः स्त्रीलाभ हो ॥ जिह्वपुरतः
 सिद्धांगभोजनमिलै ॥ ग्रीवापुरतः कण्ठभरणा
 मिलै ॥ वाङ्पुरतः शत्रुवससंग्रामलाभ हो ॥ हृद
 यपुरतः धनप्राप्ति हो ॥ नाभिपुरतः विदेशगम
 न हो ॥ सर्वांगपुरतः पुत्रप्राप्ति हो ॥ लिंगपुरतः
 धनपुत्रप्राप्ति हो ॥ उरुपुरतः साहाय्य हो ॥ ज
 थापुरतः विश्रहानी हो ॥ शिरगमन हो ॥ चरण
 पुरतः स्थानप्राप्ति हो ॥ चरणपृष्ठीपुरतः भ्रम
 न हो ॥ शिरगमन हो ॥ इति अंगस्युक्तिः ॥ ॥

4

शिर	१	तन	शरीर-लक्षणा-उद्वि-सुष-दुःख-कुल-शील
मुख	२	धन	धन-रत्न-सुवर्ण-चांदि-धान-सखि-प्रिय
दाति	३	सहज	भ्रात-सेवक-साहस-विक्रम-विवेक
हृदि	४	सहज	पिता-सुख-निधी-पृथ्वी-बाहन-गृह-मित्र
उदर	५	पुत्र	पुत्र-गुरु-देवता-मंत्र-उद्वि-यत्न
कटि	६	रिपु	शत्रुभय-बंध-चतुष्पद-याउ-मातुल
वस्ति	७	जाया	स्त्री-विस्मृति-नष्ट-आपार-कलह-मार्ग
लिंग	८	मृत्यु	मृत्यु-संग्राम-गठि-चिंता-शत्रु-वार्ता
उरु	९	धर्म	सुकृति-तीर्थ-विदेश-गमन-भागे-विचार
जात्र	१०	कर्म	पदमात-नृपति-वृद्धि-यस-मान
जंघ	१०	आय	लाभ
पाद	१२	वय	वय-शत्रु-वार्ता

x

राक्षसरो	भूतरोष	भूषारो
सेहरोष	३	१३
३	१	११
गकिनी	लग्नरो	गकिनीरो
दोष	४	१०
४	७	६
स्थानवा	गकिनीरो	उलदे
उरो	५	६
५	५	५
चरोष	५	५

राशि	खगल	उच्चा	नीचा			
मेष	१	मंगल	सू	शनि	श्र	उ कूर
वृष	२	श्र	चं		स्थीर	स्त्री सम
मिथुन	३	बुध	राहु	०	उत्तमा	उ कूर
कर्कट	४	चन्द्र	गुरु	मंगल	श्र	स्त्री सम
सिंह	५	सूर्य			स्थि	उ कूर
कन्या	६	बुध	बुध	श्र	उ	स्त्री सम
तुला	७	श्र	शनि	सूर्य	श्र	उ कूर
विशाख	८	मंगल	०	चन्द्र	स्थि	स्त्री सम
धनु	९	गुरु	०	राहु	उ	उ कूर
मकर	१०	शनि	मंग	गुरु	श्र	स्त्री सम
कुंभ	११	शनि	०	०	स्थि	उ कूर
मीन	१२	गुरु	श्र	उ	उ	स्त्री सम

अथग्रहदृष्टिविचारः॥

× एकपाददृष्टिः द्विपाददृष्टिः त्रिपाददृष्टिः चतुर्थपाददृष्टिः

सू	१०	३	२	५	८	४	७ शनि १०।३
च	१०	३	२	५	८	४	७ ग्रह ५।२
मं	१०	३	२	५	०	०	७ भौम ४।८
उ	१०	३	२	५	८	४	७
वृ	१०	३	०	०	८	४	७
श्र	१०	३	२	५	८	४	७
श	०	०	२	५	८	४	७
रा	१०	३	२	५	८	४	७
के	१०	३	२	५	८	४	७

पादैकदृष्टिदशमस्तृतीये॥ द्विपाददृष्टिन
चपंचमेव॥ त्रिपाददृष्टिचतुराष्टमेवसं
पूर्यादृष्टिसप्तमसप्तमेव॥ १ ॥ ॥

अथग्रहशत्रुमित्रसमविचारगर्न ॥ ॥

ग्रह	आ	चन्द्र	जोम	उध	हृहस्य	शक्र	शनि
मित्र	म.हं	आ.उ.	ह.च	सू.श	सू.म	उ.श	श.उ
	चं.		उ		चं		
सम	उ	श.मं	श.श	मं.हं	श.	ह.मं	हं.
		ह.श		श			
शत्रु	श.श	०	उ	च.	श.उ.	सू.चं	सू.म.
						चं.	

अथचन्द्रमाकोवेराविचार ॥ पीतचन्द्र २।६
 ३।६ व्यलाभं ॥ श्वेतचन्द्र २।४। ७ शभाश्र
 मां ॥ रक्तचन्द्र १२।१।६ जुद्धोरणां ॥ रक्त
 चन्द्र ५।१०।११ मरणात् ॥ ॥

आफ्नुराशिआदिगरिगत्रुअंगमावस्थाकोच
 दमाजानिंद ॥ शिरमा १।३।५ दुव्यलाभं ॥
 हृदयमा ७।१० अतिसुख ॥ पाउमा ६।१२ म
 नउदासा ॥ पिठमा १। मनउदासा ॥ हात
 मा १०।४।२ मनआसपुग ॥ ॥ ॥

५ सूर्यगोचरवामवे भौमशनिराहु चन्द्रगोचरवामवेध॥

६।१०।३।११३३३ ६।११।१०।३३३ ३।११।१।६।७ ३३३
१२।१।२।५वेध २।५।६।१२वेध १।६।५।१२।२वेध.

[illegible]

जन्मराशि आदि गरि विचार गर्नु वा मवेध जानी नूह ॥

क. छ	मे. व	रे. अ	स. र्ण	७२	भा. ड. व	कृ. र्ण	१६
उ. ध	सि. ह	म. ह	मो. म		मा. र्ण		११
म. व	वि. शि. क	रे. म. आ			वे. शा. व		२०
व. जे	क. न्या	प्र. मि. अ	नु. व	१४४	आ. धि	भ. र्ण	१२
ठ. न	मि. यु. ने	म. प्र	च. ड		आ. व.		२६
म. श	क. क. ट				आ. वा		२३
ग. न	ध. नु. उ. ह. वि		गु. ह	२१६	जे. त		४०
न. प	मी. न	त्वा. वि			यो. ष		४५
य. व	नु. ला	अ. ओ	भ. र्ण	२८८	ज्यो. ष्ट		४७
घ. फ	दु. ष	म. प्र	श. मि	३६०	का. र्ति. क		५०
च. स	म. कर	अ. व			मा. घ		५५
ज. व	ऊ. म	श. प्र			फा. गु. ल		५८
ल. ह	रा. शि	न. श. त्र	वा. र	म. नु	मा. म	प. श	नि. वि.

अथ उर्ध्वमुखतिर्यमुखअधोमुखनक्षत्रलिप्यने ॥ ॥

ति आ. र. श्र. व. उ. फा. उ. बा. उ. भा. शनि रोहि धने. उर्ध्वमुख
जो पुन हस्ता अभि. मृग. रेव. अज. स्वा. चि तिर्यमुख
मू. कू. मया विता भर. अश्ले पूषा पू. फा पू. भा अधोमुख

रविवार तिथि भौमवार तिथि शनिवार तिथि
॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥ ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥ ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

नक्षत्र. नक्षत्र. नक्षत्र.
विमा. उ. फा. पू. भा विमा. उ. फा पू. भा विमा. उ. फा. पू. भा
पुन. कू. नि. उ. बा. पुन. कू. उ. बा पुन. कू. नि. उ. बा
इतिस्त्रीप्रसरयोग ॥ ॥

अथनाडीचक्रं ॥ ॥ आरडादेधिगचुर. सूर्यवस्था
नक्षत्रचन्द्रमाभयाकोनक्षत्ररोगिकानामकोनक्ष
त्रयतिरुकनाडिमापयामृत्यु ॥ ॥

आ पु नि अथहि प्रसरयोग ॥ ॥

आ	पु	नि	अथहि प्रसरयोग ॥ ॥
पू	म	अ	चित्रा २ ७ १२ वृह मू शनै मंगल
उ	ह	चि	मृगशिरा २ ७ १२ वृह मू मंग. शनै
अ	वि	स्वा	धने २ ७ १२ वृह मू मंग. शनै
ज्ये	मू	पू	वृह मू मंग. शनै
ध	श्र	उ	वृह मू मंग. शनै
श	पू	उ	वृह मू मंग. शनै
म	अ	उ	वृह मू मंग. शनै
कू	रो	मू	वृह मू मंग. शनै

धातचक्रम्॥

५	मे	हृ	मि	कं	सिं	क	तु	वि	ध	म	कुं	मी	राशि
१६	५१०	३७	२९	३८	५१०	६१२	१६	३८	६१२	३८	५१०	लिथि	
९१	१४१०	९२	१२	९३	९५१०	१४	११	१३	१४	१३	१५१०		
र	श	च	उ	श	श	हृ	भ्र	भ्र	म	हृ	भ्र	वार	
मघा	हृ	स्वा	अनु	मू	भ्र	श	रे	भ्र	रो	आ	जलो	नक्षत्र	
मे	कं	कुं	सिं	म	मि	ध	वृ	मी	सिं	ध	कुं	राश	
मे	हृ	कं	तु	म	सिं	कं	वि	ध	कुं	मि	सिं	लग्न	
घान	या	घा	द्या	द्या	या	घा	घा	घा	घा	घा	घा		

अथ गणानक्षत्राणि ॥ ॥

५ देवगरा अ. म. उ. ति. ह. खा. अ. आ. रे.
१ ५ ७ ८ १३ १५ १७ २२ २७

मनुष्याणां भ. रो. आ. उ. पु. प्र. ज. ज. ज.
२ ४ ६ ११ २० २५ ५२ २१ २६

राक्षसगरा रु. अ. म. चि. वि. ज्ये. मू. ध. श.
३ ८ १० १४ १६ १८ २२ २४

५ अग्रनाडी अ आ उ ङ ह जे मू श पू

मध्यनाडी भ मृ ति पू वि अ पू ध उ

अंत्यनाडी कृ रो अ म खा वि उ श्र रे

इति नागेशचक्रस्त्रिचक्रयेकनारिष्योभया

अथ मङ्गल विवाहगद्यविशेषविचारः

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥



ईशानदिशा रूपेष्टि.	रवीदिशा रूपेसेश्वर्य.	आग्नेयदिशा रूपेष्टना श.
उग्रदिशा रूपेस्थामिनसु ख.	गुरुमथिरु पुनस्तानाश	दक्षिणदिशा रूपेस्तीनाश
वायवदिशा रूपेशत्रुदोष पीग.	पश्चिमदिशा रूपेसंपत्ति.	नैऋदिशा रूपेस्थामिनो मृत्यु.

॥ मिठोरस्पडु न्याः ॥

फल-पुल-का-वृ-श-मा-न-ला-उ-का-न-जी-क-मा-हा-ति
 घो-डा-स-र्प-का-सि-र-मा-दे-व-ता-रा-जा-म-नु-ष-का-य
 र-मा-गा-इ-का-गो-ठ-मा-स-ज-न-का-स-भा-मा-य-ज-मा-रा
 जा-का-ब्रा-ह्म-रा-का-न-जी-क-मा-से-ना-क-रा-मा-क-म
 ल-मा-पू-जा-ग-र्ग-ठा-उ-मा-लि-प्पा-का-ठ-व-मा-द-हि-का
 भा-उ-मा-धा-न-का-रा-स-मा-य-ति-मा-व-स्था-का-खं-जन
 दे-खा-त-क्षि-को-वृ-द्धि-ऊं-छ-गो-व-र-मा-व-स्था-को
 दे-खा-गो-र-स-को-वृ-द्धि-ऊं-छ-ह-रि-या-या-स-मा-व-स्था
 को-दे-खा-क-प-रा-मि-ल-छ-॥ व-ग्नी-मा-व-स्था-को-दे-खा
 आ-प्रा-श-री-र-को-ना-श-ऊं-छ-॥ द-य-र-का-भि-न्ना-मा
 व-स्था-को-दे-खा-ध-न-को-ना-श-ऊं-छ-अ-शु-चि-स्था
 न-मा-व-स्था-को-दे-ख-रोग-ला-गो-सू-॥ वा-घा-भे-ज
 का-पि-ठ-मा-व-स्था-को-दे-खा-चों-डो-पि-या-रा-मा-छ-सं
 ग-भे-ठ-ऊं-छ-भै-सि-उ-ट्-ग-उ-हा-हा-उ-स-प्र-श-ान
 मा-द-य-र-का-कु-ना-मा-गे-ग-र-मा-प-र्ष-लि-मा-ख-रा
 नी-मा-रो-म-मा-य-त्रि-ज-गा-मा-व-स्था-को-दे-खा-अ
 भ-हो-म-र-रा-हो-ला-रोग-ला-ग-ला-भ-य-हो-ला-
 पां-ष-के-ला-या-को-दे-खा-अ-भ-ऊं-छ-पा-नी-च-ल

नाठाउमावसिपानिपिंशदेष्वाश्रमऊंछ.सूर्योदय
 कालमाषजनदेष्वा.वधियाऊंछ.सूर्यअस्माउ
 ना.कालमादेष्वा.ननिकोऊंछ.लशजीगर्नभनि
 राजाजौनदिसानिर.जौंछनसोहिदिसानिर.खं
 जनगयाकोदेष्वा.चौंडैरात्रुमारिराज्यलाभऊंछ.
 जसजगामा.मैथुनरोम्.जसजगामा.द्वयकोषा
 नीऊंछ.जसजगामा.छादछ.जसजगामा.कां.
 चनऊंछ.जसजगामा.विद्यागर्ह.जसजगामा.
 अगारऊंछ.विचारगर्नमनसुवभषा.पृथ्वी
 षोडलीहेर्नर.निश्चयऊंछ.आफुलेदेष्वा.म
 याकोदेष्वा.अथवा.षोरंदोदेष्वा.अथवा.हानपा
 उ.दुष्टियाकोदेष्वा.अथवारोगलाणाकोदेष्वा.
 जसोदेष्वा.नरैआफुशरीर.पनिऊंछ.आफु
 शरीरकन.कैहेलुकाउन्ना.कैहेदेष्वाउन्नागरो
 छ.वहनधनमिलोस्.अकाशमा.उठदादे
 षाछाछागयाकादाजुभाई.संगभेठऊंछ.वठि
 याजगामा.खंजनवस्याको.राजालेदेष्वा.तसरा
 जमाश्रमऊंछ.अश्रमस्थानमा.खंजनवस्याको
 देष्वा.राजालेब्राह्मण.गुरु.साधुजन.देवनाथ

निको साल दिन सम पूग वा अशुभ पनि शुभ
ऊँहूँ दिसा स्थान खंजन को शरीर लगन नक्ष
त्र तिथि बार सब विचार गरि सांति गर्नु पूर्व
दिशा तरफ खंजन देखा ईश्वर मा चित्र गो
स् संपूर्ण कार्य को सिद्ध पनि हु वस् आग्न
दिशा देखा धन मिलोस् दक्षिण दिसा देखा
रोग लागोस् नै अन्य दिसा देखा कसै संग रु
गडा हु वस् पश्चिम दिसा मा देखा लक्ष्मि मि
लस् वाय दिसा मा देखा सुन्दर कपडा वाह
न घर मिलोस् उत्तर दिसा मा देखा दिव्य स्त्री
प्राप्ति हु वस् ईशान दिसा मा देखा अवश्य आ
पुम र राऊँहूँ ॥ ॥ इति खजरी दृढ दर्शन
फल मशुम् ॥ ॥

६२

अथ अश्वीनादिरेवतिपर्यंत नक्षत्र ज्वल पद लिख्यते॥

न	श	पा	वा	शु	रोगरहत्यादिनसंख्या रोगसात्तिदान
१	२	३	४	५	भोजनदानं देवताशुभहोई॥
६	७	८	९	१०	श्वेतवस्त्रदानं यमदेवताशुभहोई॥
११	१२	१३	१४	१५	सुतदानं अग्निदेवताशुभहोई॥
१६	१७	१८	१९	२०	वस्त्रदानं मृगदेवताशुभहोई॥
२१	२२	२३	२४	२५	दक्षिणामोमदेवताशुभहोई॥
२६	२७	२८	२९	३०	रुक्मगोदानं सिवदेवताशुभहोई॥
३१	३२	३३	३४	३५	वस्त्रदानं अदितिदेवताशुभहोई॥
३६	३७	३८	३९	४०	श्वेतवस्त्रदानं वाकपतिदेवताशुभहोई॥
४१	४२	४३	४४	४५	लवणादानं सर्पदेवताशुभहोई॥
४६	४७	४८	४९	५०	सुवर्णादानं पितृदेवताशुभहोई॥
५१	५२	५३	५४	५५	गुंडदानं भगदेवताशुभहोई॥
५६	५७	५८	५९	६०	पीतवस्त्रदानं अर्यमादेवताशुभहोई॥
६१	६२	६३	६४	६५	गोदानं सवितादेवताशुभहोई॥
६६	६७	६८	६९	७०	चावलदानं भुवदेवताशुभहोई॥
७१	७२	७३	७४	७५	वस्त्रदानं वायुदेवताशुभहोई॥
७६	७७	७८	७९	८०	सुतदानं इन्द्रदेवताशुभहोई॥
८१	८२	८३	८४	८५	मृदंगदानं मैत्रीदेवताशुभहोई॥
८६	८७	८८	८९	९०	

ज	१४	१५	३०	७	वस्त्रदानं स-क्र देवताश्रमहोई
म	८	१५	५०	१४	कांस पात्रदानं नी-मति देवताश्रम
र	१५	१५	५२	०	प्रवालदानं त्वय देवताश्रमहो.
उ	१०	८	२	१२	पीतवस्त्रदानं विष्णु देवताश्रमहो
भ	१०	२०	१७	१५	सुवर्णदानं विष्णु देवताश्रमहोई
ध	१०	१५	१४	१४	पीतवस्त्रदानं वांस देवताश्रमहोई
श	१०	१५	१२	१५	लवणादानं वरुणा देवताश्रमहोई
प	८	१४	०	३०	श्वेतवस्त्रदानं चरणा देवताश्रमहोई
उ	७	१५	१३	७	दृषभदानं हर्ष भ देवताश्रमहोई
इ	२०	५	१५	१५	पंचरत्नदानं पुषा देवताश्रमहोई

अथ प्रतियक्षति विषोऽश ज्वल पट्टलिख्यते ॥ ॥

नि	पा	पा	पा	पा	रोगहर्षादि न संख्या रोगशांतिदानं
१	११	१५	२२	१३	युतदानं करोति कष्टनिकोहोई
२	१०	७	१५	२५	कांचनदानं करोति कष्टनिकोहोई
३	१०	४५	१०	०	रक्तवस्त्रदानं करोति कष्टनिकोहोई
४	२१	५४	३५	२२	प्रवालदानं करोति कष्टनिकोहोई
५	२१	१५	१५	३५	उभयदानं करोति कष्टनिकोहोई
६	८	०	१५	२५	चित्रवस्त्रदानं करोति कष्टनिकोहोई
७	५	७	१५	२३	पीतवस्त्रदानं करोति कष्टनिकोहोई
८	१५	१०	१५	५	पीतवस्त्रदानं करोति कष्टनिकोहोई

९	११	१३	११	०	रक्तवस्त्रदानं करोति कष्टनि को हो
१०	१०	४५	१२	२२	पीतवस्त्रदानं करोति कष्टनि को हो
११	०	८	२८	०	कांस्पणत्रदानं करोति कष्टनि को हो
१२	४	२५	०	११	श्वेतवस्त्रदानं करोति कष्टनि को हो
१३	२	११	१६	२६	सुवर्णदानं करोति कष्टनि को हो
१४	०	०	०	०	शेषदानं करोति कष्टनि को हो
१५	६८	११	९	२६	रक्तवस्त्रदानं करोति कष्टनि को हो
२०	०	०	३	११	वस्त्रदानं प्राप्ता भोजन करोति

अथ रक्षादिनिष्यं नवारज्वलपदलिखते ॥

शर	पा	पा	पा	पु	रोगशान्तिदानं वलीदानं कादिशा
१	१०	१	९	५	रक्तवस्त्रदानं करोति आग्नेदिशा
च	३	१३	२०	१६	श्वेतवस्त्रदानं करोति पूर्वदिशा
म	५	७	२५	३०	प्रवालदानं करोति ईशानदिशा
वु	४	६	८	१०	कांचनदानं करोति दक्षिणादिशा
वृ	१	४	१०	२०	पीतवस्त्रदानं करोति नैऋत्यदिशा
श्र	६	१६	५	९	श्वेतवस्त्रदानं करोति पश्चिमदिशा
श	३०	१२	१५	२०	रक्तवस्त्रदानं करोति वायव्यदि

मास

दिन

रात

चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	भा	का	मा	पौ	मा	फा
३०	३२	३४	३५	३६	३२	३०	२८	२६	२५	२६	२८
३०	२८	३६	३५	३६	३२	३०	२८	२६	२५	२६	२८

इति चैत्रमासादि द्वादशमासफागुनतकदिनरातका
धरिलिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अश्विनीरविवारेण श्वमेमृगशि
रस्तथा ॥ अश्लेषाभौमवारेण बुधहस्ता प्रकीर्तिता ॥ १ ॥
अनुराधागुरुवारेण शुक्रे चोत्तराषाढयो ॥ शतभिषाशनि
वारेण आन-रादियथाक्रमतः ॥ २ ॥ ॥

रविवारस्य आन-रादियोगः ॥ ॥ ॥

नक्षत्र योगः फलम् ॥ ॥

अ आनंद धनलाभ जात्राराजसेवा शुभकर्मगर्तुः
भ कालदे माहाभय उग्रसठकर्म वधवंधन अयोगी
क दशाश धननाश कोटकर्म अनिरुद्ध देदशास्त्र
रा प्रजापति प्रजासुख धनप्राप्ति सर्वकर्म प्राप्ति विद्याविवाह
म सौम्य सौख्य धनलाभ यात्राभूषण हस्ते देदसग्रा प्राप्ति
आ धाक्ष धनसय हास्त्र अग्नीहस्त्र यात्रापाषाण
उ ध्वज सौख्यविद्या यात्रावस्त्र हस्तसेवासंग्रामविघात
ति श्रीवत्स बुद्धिवर्द्धति वस्त्रबीज प्राप्ति यात्राचर
अ वज्र वज्रभय संग्रामपाई बलशाप भूतघातक
म मृगर भयराताय मयं हृषिविवाह उग्रसठभूतकर्म
प क्षत्र कीर्तिदा इ उग्रसठचवदकर्म यात्रा
उ मैत्र मित्रप्राप्ति संग्रामभूषण वस्त्रविवाह मित्रप्राप्ति
ह मानस सौख्य प्राप्ति कृषी वस्त्र यात्रा प्राप्ति विवाह व्रतवंधन

हृषि

चि ममाद्य शुभवरदाश्चरदातावस्त्रअश्वहस्तिप्रासन.
 ता लंबक निष्फलं वस्त्रसंग्रामवीजअन्नप्रासनअश्ववि
 वि उत्थान कार्यनासअयोगीविषयासादिअग्निघात.
 अ मृत्यु मृत्युदाइयोगसवरिभकर्मवीजेतदिनभ
 जे कारा कार्यनासउग्रकर्मसठकर्मकार्यदिअग्निघात
 म सिद्धि सिद्धिविद्याचतुष्यदहविविवाहसस्ययात्रा.
 र शुभ शुभफलसंग्रामचतुष्यदयात्रात्रनबंधन
 उ अमृत मृत्युनाससंग्रामविवाहवस्त्रवीजशुभ
 य शुशल रोगभयंसठकर्मअयोगीसर्वकर्मरहिता.
 श गदाध धनचिंतायावीजअन्नप्रासनचौरकर्म.
 ध मानेग महाभयहस्ति कर्मयात्रा कृषीविद्यावस्त्र.
 श राक्षस प्राणाग्रात्रनबंधनादिमयभूतविषाग्रं.
 प्र चर चरंभवतिचौरकर्मचतुष्यदकर्मविषादि.
 उ स्थिर धैर्यसुखभोग्यसंग्रामकृषिविवाहप्रासनकर्म.
 र वर्द्धमान वृद्धिवर्द्धतिसंग्रामवस्त्रयात्राप्रासनविवाह.

चन्द्रयोगनामश्रुभाश्रमफलम् ॥ ॥

मृ आनंद धनलाभयात्रासुकृषीब्रतबंधरहकर्म

आ कालदंड महाभयअयोगीविषाग्नीसिद्धिसंग्राम

उ धमाक्ष धननायात्राअश्वशौरप्रासनवाटिका

ति प्रजापति प्रजासुखयात्राप्रासनकृषिवनबंधनगृह

अ सौम्य सौम्यधनपाषाणकाष्ठसंग्राममद्यकर्म

म धाक्ष धनक्षयकृषिविवाहमद्यस्यवाटिकाकाष्ठ

ए ध्वज सौख्यविद्यायात्रामद्यसस्यवाटिकाभूत

उ श्रीवत्स बुद्धिबर्द्धतिसंग्रामविवाहवीजमद्यवैद्यवा

ह वज्र वज्रभयकरोतिरोगभययात्राभूषणालहसंग्राम

चि पुद्गर भयदाहमद्यअश्वगजकर्मप्रासनशौर

वा क्षेत्र कीर्तिराहविवाहशौरकृषीवाटिकाप्रासनअ

वि मैत्र मित्रप्राप्तिविषयासादिपावणामद्यभूतशस्त्रक

अ मानस सौख्यप्राप्तियात्रागृहप्रवेशभूषणविवाहादिश्रम

जे पमाध्य वहाइकष्टमद्यतिक्ष्णभूतकर्मपुष्टिकर्म

म लंबक निष्फलविवाहकृषीमद्यवाटिसस्यरोपन

ए उत्पान कार्यनाशअयोगीसर्वकर्मवर्जितविषाग्नीसिद्धि

एकावास्त

ॐ मृत्यु मृत्युदाई सर्वकर्मवर्जित असिद्धि
 ० कारा कार्यनाशयात्रा मिलापकर्म कृषिकदेवकर्म
 अ सिद्धि सिद्धिविद्यायात्रा सस्य प्रासनशौरजश्वरोहन
 ध शुभ शुभफलयात्रा कृषीरसप्रासनशौरव्रतबंध
 का अमृत मृत्युनासवाटिकाशौरप्रासनरसकर्मचौक
 पू मृशल रोगदाइयात्रा अश्वशीरकर्म पशुयात्रा शुभ
 उ गदाय धनचिंतागृहप्रवेशविवाहहस्तिअश्वसंग्राम
 रे मातंग माहाभयअश्वगजविवाहशौरशुभशीकर्म
 अ राक्षस प्राणनाश शुभकर्मवर्जितवेतालपिलाचकर्म
 म चर कार्यनाशशस्त्रकर्मसंग्रामजार्द्वलविषावेतालकर्म
 क स्थिर धैर्यसौख्यशस्त्रकाटलिक्षावधबंधकलहकर्म
 रो वर्द्धमान बुद्धिवर्द्धतिवीवाहव्रतबंधनरसप्रासनकृषिकर्म

मंगलयांगनामशुभाशुभफलं ॥ ॥

अ आनंद धनलाभपाषाणसठउकर्ममिकर्म
 म कालहंत माहाभयअयोगीसर्वकर्मवर्जित
 पू धृमाक्ष धननासउग्रसठकर्मभूतवेतालपशुकर्म
 उ प्रजापति प्रजासुखविवाहप्रवालसुवर्णरजतहलकर्म
 ह सौम्य सौख्यधनयात्राविवाहरक्तवस्त्रधारणानामकर्म

वि धाश धनक्षयं अयोगी अशुभकर्मसिद्धि शुभ
 ला धज सौम्यविधा धजकर्मभूतकर्ममय सुवर्णकर्म
 वि श्रीवत्स रुद्रिदाइ शुभकर्म अतिशयस्त्रयासादिक
 ज वज्र वज्रभयं यात्रा विवाह सुवर्णभूत प्रवालक
 जे मुद्गर भयदाइ कामसिद्धादिकर्म पावाराकर्म पु
 म क्षेत्र कीर्तिदाइ वीज विवाह बाट कामं ज साधन सहकर्म
 ए मैत्र मित्रप्राप्ति उग्रसेना प्रवेश प्रवाल विरसा
 उ मानस सौख्य प्राप्ति विवाह सुवर्ण प्रवाल आइयलकर्म
 य प्राण्य उरदाइ यात्रा मिलापकर्म जलकर्म शुभ
 लं वक निष्कलं यात्रा प्राप्त अश्वशस्त्रमय नौकाकर्म
 व उन्मान कार्यनाश शुभकर्म वर्जित अशुभकर्मसिद्धि
 श मृत्यु मृत्युदाइ विषयासादिसाहसकर्म अशुभ
 ए कारा कार्यनाश अश्वकर्म कार्यभेद पाषाणाविष
 उ सिद्धि सिद्धिसिद्धिविषय विवाह सुवर्णभूत प्रवाल
 रे शुभ शुभफलभूत संग्राम प्रवाल सुवर्णयात्रा
 ज अमृत मृत्युनाशन यात्रा ताम्र प्रवाल सुवर्णसाह
 भ मुशल रोगदाता शस्त्रविषयासादि पाषाणाभेद वध
 क गदाखा धनचिंता विषाग्नि शस्त्रभेद वेतालभूत

रक्तवस्त्रकौसुमकर्म

मृत्युलक्षकर्म

रो मातंग माहाभरुतिशालनामप्रवालरक्तवस्त्रादिवलक
 म राक्षस प्राणनाशमयसठउग्रशस्त्रभूतवेतालभूतकर्म
 आ चर कायविनाशमस्त्रकर्मविषपासादिकारुति
 उ स्थिर धैर्यसौख्ययात्रामंत्रसाधनपाषाणभूतपिशाचकर्म
 ति वर्द्धमान वर्द्धमानवृद्धिवर्द्धनियात्राभूषणप्रवालनाम
 पुष्ययोगनामप्रभाप्रभफलम् ॥ ॥
 ह आनंद अनलाभयात्राप्राप्तनक्षौरविद्याविवाहवस्त्र
 चि कालदंड माहाभयभेदबंधविषपासादिकर्मवर्जित
 या रक्षाक्ष धननाशयात्रावस्त्रसेवावैद्यप्राप्तनक्षौरकर्म
 वि प्रजापति प्रजासुखशालप्रवालपीतवस्त्रसंप्राप्तवि
 अ सौम्य सौख्यधनयात्रावस्त्रविवाहगृहप्रवेशक
 जे धांक्ष धनक्षयकाष्ठपाषाणसठवेतालभूतविषपासकर्म
 म ध्वज सौख्यविद्याकृषिविवाहवातिकासम्यरो
 ए श्रीवत्स वृद्धिदाताचतुष्पदयात्रामित्रसमागमसंधान
 उ वज्र वज्रभयस्थिरकर्मगृहादिविवाहवस्त्रभू
 ० मुद्गर भयदाययात्रापाषाणदिकर्मसंधिदिनम्
 अ क्षेत्र अभकृतिशौरप्राप्तनयात्रासम्यवाटिकाकर्म

ध मैत्र मित्रप्राप्तियात्राप्रसनं वस्त्रभूषणसेवामंत्रौषधीवनबंध

श मानस सौख्यप्राप्तिचतुष्टयदवाटिकाप्रवालभूषणामय

र यमाद्य योवरदादयात्राचतुष्टयदपाषाणसुत्क

उ लंबक निष्कलंगृहप्रवेशवस्त्रभूषणकृषिविद्याकर्म

रे उत्थात कार्यनामश्रमकर्मवर्जितविषयादिकर्म

अ मृत्यु मृत्युदाईसर्वकर्मवर्जितश्रमनभवति

म कारा कार्यनाम तीक्षाशस्त्रघटनकृषीमयकर्म

क सिद्धि सिद्धिविद्यासंग्रामकादृतिक्ष्णशस्त्रवेतालभूतकर्म

रो शुभ अमृतफलंकृषिवस्त्रअश्वऔषधसुवराग्नि
समकर्म

म अमृत मृत्युनामवस्त्रकर्मयात्राशौरविवाहप्रासनकर्म

आ शुशाल रोगदाइशस्त्रघटनकर्पटसंठकर्म

उ गदाद्य धनचिंतायात्रा वस्त्रअश्वऔषधशौरप्रासनकर्म

ति मानंग मायाभयवस्त्रयात्राप्रसनभूषणसेवागजकर्म

अ राक्षस प्राणानाशजाइवलविषयासादिकर्म

म चर कार्यनष्टबीजविवाहविषाग्निचौरभूतकर्म

र स्थिर धैर्यसौख्यमयशस्त्रसठचतुष्टयदयात्रायति

उ वर्द्धमान बुद्धिवर्द्धनीगृहविवाहप्रासनवस्त्रभूषणवि

ह

अथगुरुयोगनामशुभाशुभफलं ॥ ॥ ॥

अ आनंद धनलाभयात्रावस्त्रविवाहप्राप्तनसेवाकर्म.

जे कालद माहाभयअयोगीविषयासादिकर्मबंधन.

म धनराश धननाशकृषिविवाहवैद्यवाटिकातीक्षाकर्म.

प प्रजापति प्रजासौख्यचतुष्पदउग्रभूतपिशाच.

उ सौम्य धनप्राप्तिवास्तुविवाहव्रतबंधनवस्त्रभूषणसेवा.

० धांस धनक्षययात्रामयसंधीदिनंसर्वकर्मवन्नित.

प्र ध्वज सौख्यविद्यायाषाराचकर्मयात्राक्षौरप्राप्तन.

ध श्रीवत्स बुद्धिदाइभेदविषयासादिभूतवेतालयात्राकर्म.

श वज्र वज्रभयपरिक्षाजलमयवाटिकाकर्मशुभं.

प गुरुर भयदाइयात्राभेदविषादिभूतवेतालकर्म.

उ क्षेत्र शुभकृतिप्रवेशप्राप्तनवस्त्रविवाहबीजरोपनकर्म.

रे मैत्र मित्रप्राप्तिसंग्रामअथविवाहवस्त्रयात्रासेवाक.

अ मानस सौख्यधनचतुष्पदयात्राप्राप्तनवस्त्रभूषणबीज.

भ यमाव्यवरदाइसंग्रामजाइवलयाषाराभूतयात्रा.

ह लंवक निष्फलशस्त्राग्निविषयासादिकर्मरोती.

रो उग्रान कार्यनामजाइवलअन्यकार्यअशुभ.

मृ मृत्यु मृत्युदाइभेदबंधनअन्यसर्वकर्मअशुभ.

आ कारा कार्यनाशसंग्रामकाष्ठतिक्षाविरसाधनकर्म.

उ सिद्धि सिद्धिविद्यासंग्रामवस्त्रयात्राशौरभूषणकर्म.

नि शुभ शुभफलकविद्यायात्रासंग्रामवस्त्रयात्राशौरभूषणकर्म.

अ अमृत मृत्युनाशसंग्राममयवेतालभेदतिशाचतुषदकर्म.

म मुशल रोगभयविवाहबीजसत्परोपनवाटिकाकर्म.

प गदाख्य धनचिंतायात्रामयउग्रभेदवंधनचतुषदकर्म.

उ मातंग माहाभयप्रवेशचतुषदवंधनबीजमंत्रवस्त्रगजकर्म.

ह राक्षस प्राणनाशजादुवलअयोगीचतुषाशुभ.

चि चर कार्यनाशशौरवस्त्रप्रासनचतुषदवंधनहस्तिकर्म.

स्वा स्थिर धैर्यसौख्यचतुषदवस्त्रप्रासनशौरविवाह.

वि वर्द्धमान दुहि वर्द्धनिवस्त्रविवाहचतुषदवंधनजात.

अथशुक्रयोगनामशुभाशुभफलम् ॥ ॥

उ आनंद धनलाभायगृहप्रासनचतुषदविवाहचतुषदवंधनजात.

० कालइं माहाभयअयोगीसर्वकर्मवर्जितअशुभदिन.

अ रक्षाधननाशयात्रासेवास्थादुवलवाटिकासत्परोपकर्म.

ध प्रजापति प्रजासुखयात्राचतुषदवंधनसेवागृहप्रासनबीजकर्म.

श सौम्य धनप्राप्तिचतुषदअश्वगजवैद्यसौम्य.

प धांश धनक्षययात्रागृहप्रासनचतुषदवंधनविषकर्म.

ॐ धनः सौख्यं विद्या गृह विवाह प्राप्ति नव वस्त्र वीज हस्ति.

र श्री वत्स उद्दिष्टा इत्याव प्रवेश व्रत वंधन कृषि.

अ वज्र वज्र भययात्रा वस्त्र भूषणा वेपार शौर्य ग

म मुहुर मयदाइ संग्राम भूत पिता च पाठ विषलट

क क्षेत्र कीर्तिदाइ स्थाइ वल विक्रय शस्त्र वेताल. विषयासादि.

रो मैत्र मित्र प्राप्ति प्रवेश विवाहा कृषि अश्व गज

म मानस सौख्य धन यात्रा वीज गृह प्राप्ति नव वस्त्र शौर्य विवाह व्रत.

आ पद्माख्या वरदाइ संग्राम मंत्र साधन पाषाणा कर्म

प लंबक निष्कल यात्रा वस्त्र शौर्य वाटिका प्राप्ति

नि उत्पन्न कार्य नाश घात कर्म अश्व भूति न भूत भूत करोति

अ मृत्यु मृत्युदाइ सर्व कर्म वर्जित भूत भूति न.

म कारा कार्य नाश विवाह वीज विक्रय वाटिका मय मय.

प सिद्धि सिद्धि विद्या भूत मंत्र विरयात्रा विक्रय वाटिका मय.

उ शुभ शुभ फल प्रवेश विवाह व्रत वंधन वस्त्र भूषणा.

ह अमृत मृत्यु नाश यात्रा प्राप्ति नव वस्त्र विहसे वा कृषि कर्म.

वि मुशल रोग भय शौर्य प्राप्ति नव वस्त्र वंधन वस्त्र कृषि वैद्य कर्म.

सा गदा धन चिंता विवाह प्राप्ति नव वीज अश्व वैद्य हल सेवा.

वि मानंग माहाभयहस्तिविक्रयमयविषयासादिपाषाण.

अ राक्षस राक्षसप्राणानासअशुभदिनसर्वकर्मवर्जित

जे चर कार्यनासकष्टतीक्ष्णशस्त्रविषचरकर्म

म स्थिर धैर्यसौख्यविवाहबीजवाठिकास्यरोपवैद्य.

स बर्द्धमान बुद्धिदाईयात्राविक्रियवेतालयाद्वलमय
चतुष्पाद.

अथशान्तियोगनामशुभाशुभफलम् ॥ ॥

अ आनंद धनलाभलोहमयजलभूतपिशाचकर्म.

क कालदंड माहाभयविक्रियादिउग्रसठविषयासादिकर्म.

उ धूम्राक्ष धननाशप्रवेशहस्तिसंग्रामविवाहमय.

रे प्रजापति प्रजासुखयात्राप्रवेशहस्तिघोटकादि.

ज सौम्य धनप्राप्तियात्रालोहशस्त्रभूतसाधनकर्म

म धांस धनक्षयसंग्रामजाइवलविषयादिशस्त्रकर्म.

ह ध्वज सौख्यविद्याचतुष्पादक्रयविक्रयमयविषामि.

शे श्रीवत्स बुद्धिदाईप्रवेशस्थिरभूतसाधनथापनावसंग्राम

स वज्र वज्रभययात्राप्रवेशहस्तिमयकर्मशुभं

आ मुहुर भयदाईजाइवलसंग्रामभूतमयकर्मशुभं

पु शेत्र कीर्तिदाइसंग्राम यात्राद व्यभूतचतुषदक
 नि मैत्र मित्रप्राप्तियात्राच घेदहस्तिहृषिप्रीतिदावा
 अ मानस सौख्यधनविषयादिकर्मसंज्ञवेतालकाष्ट
 न यथायथा

लं वक निष्पलक्रयविक्रयसत्यदेदनलोहखेत
 उ उत्पन्न कार्यनाशहस्तिस्थिरअश्वजाइवलश्रमं

ह मृत्यु

चि कारा कार्यनाशविंशहस्तिलोहमयसठविषयादिक
 स्या सिद्धि सिद्धिविद्यामयबीजविवाहहस्तिजाइवल
 वि श्रम

अ अमृत मृत्युनासविवाहयात्राहस्तिप्रवेशजाइवलस्थीर
 ज्ये मुशल रोगभयमयवेतालभूतपिशाचकार्पट
 म गदाय

पू मातंग माहाभययात्राक्रयविक्रयशस्त्रप्रणकर्म
 उ राक्षस प्राणनासश्रमदिनश्रमकर्मवर्जित

० चर

श स्थिर धैर्यसौख्यलोहमययात्राक्रयविक्रय
 य वर्द्धमान बुद्धिवर्द्धतियात्राचतुषदलोहकर्मषु

× अथ यमयं ॥ ॥ जोर विवारे मया धनेष्टा ॥ गोम

पुष्पनष्टा ॥ मंगल भरुणी कृत्तिका युक्ता ॥ हस्त फाल्गु
णी बुध विरुद्धा ॥ १ ॥ जौ गुरु वारे मूल रेवति ॥

शुक्र रवि वारे रोहिणी स्वति ॥ श्रवण शतभिः
षा जौ सनि वारे ॥ इति यमयं ष जगत प्रसिद्धा

× ॥ २ ॥ अथ दध्यातिथि ॥ ॥ शनि सप्ते ॥

शुक्रानाहुद ॥ षष्टि ॥ दृहस्पति होय विरुद्ध ॥ व
धनिय ॥ ददसि सूरेंद्रा मि ॥ मंगल परिहरद
रे दं वां तिथि पुरिकं हरं रे ॥ भौम रुका दसि सो
महि वारे दध्यातिथि पुरिकं हल गु वारे ॥ १ ॥

× अथ वस्त्र संग्रह ॥ ॥ गाम के पानी जे ते जाय ॥

धिर धीरे देवै पाउ जै स न मै जाते स न धी ॥ पा
दे जी तु मयि वधि ॥ १ ॥ घे ती वर्द क न्या
दुर्वल विचार ॥ ॥ न गुणि वती थी न गुणी व
वार ॥ न क्षत्र गुणि व करि वो सार जे जे ते गेलो
न ते छी न पला पिछे जी वै बाहू दिन ॥ धरि मा
स चौ बीस ॥ पूर न क्षत्र जौ पावे जे वै वर्ष स
सय विस ॥ १ ॥ अथ चन्द्र मा वास ॥ मे ष

सिंहधनुपूर्वचन्द्रा॥ दक्षिणकन्यावृषभकरंदा॥
 पश्चिमकुम्भतुलाऔमिथुना॥ उत्तरकर्कटवृश्चिक
 मीन॥ १ ॥ अथगृहकर्म॥ ॥ गृहपतिहातकर
 वपरमान॥ तच्चाकरदीर्घरगुनीआन॥ एकहा
 डिके॥ वसुकेहंरवकहोशकघरयविधिकरव
 ॥ १ ॥ धज १ धूम्र २ सिंह ३ त्यान ४ वृष ५ ख
 र ६ गज ७ धांश ८ ॥ अथरुषिकर्म॥ ॥
 जाहिनघन्ना॥ उगेसूर॥ तसौआठपरिहरहर
 वारुहं॥ मोरुहं॥ विसंधारं॥ शेषजघन्नापरिहर
 चारं॥ १ ॥ हलवारु॥ ॥ जाहिनघन्नारविके
 वासा॥ तसौजिनदियाहरनासा॥ वृषभविनास
 उयजमहिधन॥ पाठावेविकि॥ अमदकिशान
 ॥ २ ॥ लग्नेतिनी उयजमहिचासा॥ बहुविधि
 लाभतिनिकहइमापलवातिनीहोआनन्दा॥ ति
 निनिमाहादेवसभासौंदरा॥ कनइलचारिउय
 जमहि॥ धानअगातिनी॥ करैसावाधान॥ सा॥ रो॥ ह
 म॥ पु॥ प॥ ति॥ ४ ॥ व॥ ५ ॥ च॥ गुवारकडु॥ एति॥ यसा
 तिथिकहो॥ घेति॥ क॥ रोजककहो॥ इत्यविनास
 सुनहोहोकोनलरनीदुष्टे॥ वरदलेचोर॥ दुष्टे

वाठि आसुनहि पैसै घेत भल उपज वरद
जौ कैसै वरदा सुतै घेत दहास वाली मरे जौ
वरद पराय ॥ गोडा ठार कि सुडा ठार ॥ नहि भ
ल देखि सिआफार कुदै लादै वो लै वो ल ॥ केहे
डांकल क्षि भल होय ॥ १ ॥ पांचै तेर सिआ
तलिय ॥ दसय का दस जी वर नहि ॥ दिन ह
रलय जौ नथि तापर संनासि ॥ यदुवा परै धु
र धर मरै ॥ नवमि चौथि समान षष्ठि दाद
सि कलय जौ नथी वदे वेसा रुथी आन ॥ ॥

वर्षा विचार ॥ ॥ श्रावण शुक्ल सप्तमि ॥
पिके उगे आन ॥ नौलय देव वरि सि है जौ ल
गी देव उठान ॥ भानु छै सौ क्वा डुवा जौ ठहठ
हरै नी करंज ॥ किजल देखी गंग नठ कि कामि
नी रूप परंत ॥ श्रावण शुक्ल सप्तमि रय न होहि
मयार ॥ पर्वत सारि उपजी रहि कह भडूर के
नारि ॥ सावन पड़े वा भादव पुरि वा आश्विन
वहे इशाना ॥ कार्तिक कत्ता सि कि वन डोलै
कां हां करष वधान ॥ सावन शुक्ल सप्तमि नि

शिगर्जे आधिरानी॥ मोह पिहा सै वह माल बाह
 मसै विगुजरान॥ आदिन वरिसहि आरडा॥ ह
 लन वरिसुनी दान॥ कह भउर सुनु भउरी॥
 दसरि सै रीव कारी॥ दक्षिण लौ का लौ कय॥ उ
 त्तर गरजै मेय॥ अंगना वैठी केडा क कहि गेला॥
 उच क दौरि गेह॥ सै भागी कै करव पचास॥ वर
 दा का छन वरदा के घास॥ भाइ भतिजे करवास
 नीचे उचै करव चास॥ थोर जोन व बड न मलि
 या यव॥ उ कै बाध व आली उय जै नै उय जै॥ न
 उय जै नौ डाक के पारव गारि॥ चल गोरि आस
 काहे जो इस पठि पठि मर सि॥ यौ घअ ना वस
 चित नहि धर्मि॥ यक वर दो वर ते वर धान
 और अन्न सभ माटि समान॥ मूल विसाषा पूर्व
 सर्वे॥ इजौ होय अमा वस पर्वे॥ अगना घर के
 संच रह जाय॥ रतन के मोले अन्न विकाय॥ सा
 का संवत यक लख धरह॥ सात भाग के लेषा
 करह॥ जौ पै पावहु इइ औ चारि॥ परै अकाल
 कि करह वचारी॥ छ औय क जौ पावहु चीर॥

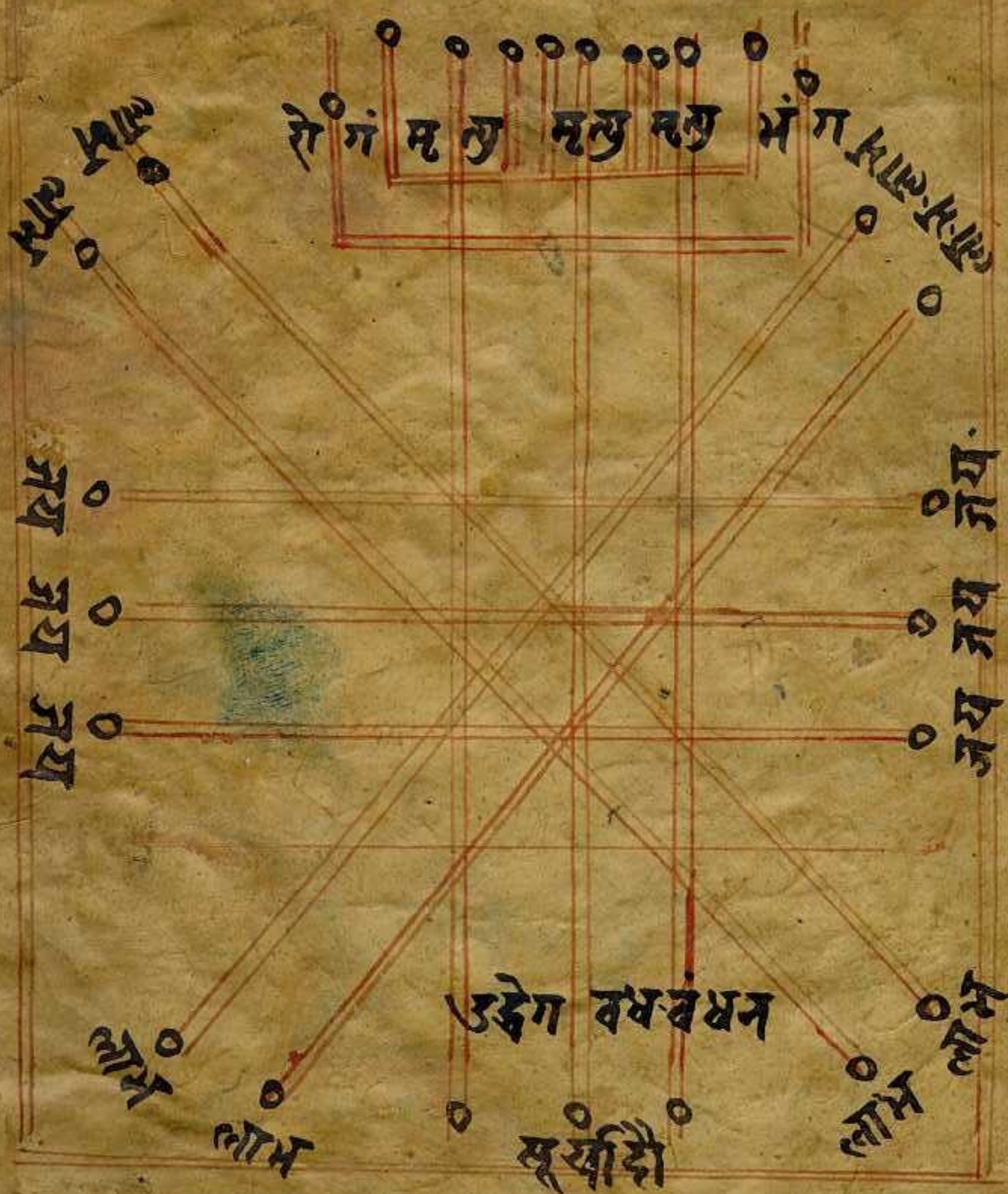
अचलेऊ किछु धरे जधिर ॥ तिन पांच जौ पाव
हसेष अचहि माठिह कौ न वि शेष ॥ गने रत
गने रत सु न्य जौ पाव रु छु ड रु दे श दे शान
र धा ह ॥ ॥ अथ रवि शशि यरिवे र ॥ ॥

रवियार विसु त भू मि सु त ॥ रवि चं दाय रिवे
ष ॥ दि व स ति नी के अंत रे हो वरि से ते दे व ॥
जौ न हि दे व वरि स त हैं ॥ यु डू मी हो स ग्रा म भू ह
खरु मे दि नी का ठि ह हि ॥ चारि कौ न य क षा म ॥
शौ म श्र क गुरु अंत रे जौ लागे प व व ॥ नि श्र य
दे व वरि सि है वृ णि क है स ह दे व ॥ ॥ अथ

मनी य लं ॥ भ जारि क है सु न हो हे बा स ॥ म व
नि भुं जै गुरां त ॥ दृ ष मि थु न श नि करे नी बा
स ॥ सिर क कं क ण पि ड य का स य ॥ क न्या तु ल
श नि दे दृ षि ॥ वे दि मा ष न रा षै ष्ट षि ॥ प णि
ध न श नी अ र्जा य ॥ हा हा काल क अ न वि का य ॥
म कर कुं भ श नी अ र्जा य ॥ दे ल भा त कौ व न
हि षा ये ॥ मी न रा शि स नि अ र्जा य ॥ घि डे गंग
उ त्तर कु न म द्ध क छ कि छु म रे व डू त ॥ भ ड

४०
५२
१
रि कहै सुन हो हे बास य ते देस कानी अर नास
अथ गृह द्वाड न्याश्रमाश्रम दिन विचार ॥
कह थी बास पड़ी वाज उछार हवर कै ता घर
काल भगा वरु ॥ दुनी या छारै वहुत सुख होय ॥
मन इक्षा फल पुजै सोय ॥ तृतीया जे घर करु
अवधाना कांस पितल घर धेनु विहाना ॥ चौथी
जे घर छावै वरु ता घर आवै भुजङ्ग मरु
इ ॥ पांचै छे छे छावै जो दानी ता घर होय काल क
हानी ॥ सते ॥ अठे ॥ सास अषाढा महिषि धेनु
अरु धरवाछा ॥ नवमि ॥ दशमि छावै जो कोइ
वस्तु पररि पावै सोइ ॥ यकाद सिद्धाय अग्नी भ
य होइ ॥ द्वादसि छावै जनी कोइ ॥ त्रयोदसि
जे घर करि है वासा ता घर करि है भोग विलासा
चतुर्दसि अमा वासा जो छावै दानी ता घर हो
य पुत्र किहानी ॥ ॥ आदि त्र्यगुरु अष्टाचा
र ॥ मैले मांजार की सोम्य वार ॥ मंगल मेछाड
खसरिर बुधे सुन हानर है थीर ॥ गुरु भुज
गमं वडानी पीडा ॥ सुकहि सुसावडा विरुडा ॥

अथ सूर्य कालानलचक्रलिख्यते ॥ ॥ सूर्य भया
 कानक्षत्रदेषिनामनक्षत्रपर्यंतगन्तु ॥ विवाहे वि
 ग्रहे पुद्गे रोगांते गमने तथा ॥ सूर्य कालानलच
 क्रं ज्ञातव्यं प्रयत्नतः ॥ १ ॥ ॥





अथ कालचक्रं दिननक्षत्रदेशिजननक्षेत्रतकगत्र



अश्विनी भरणी कृत्तिका कोपाय मेष १ कृत्तिका
 नांत्रयोपाय रोहिणी मृगशिरा अर्द्धवृष २ मृगशि
 ला को अर्द्ध आरदा पुनर्वसु को तिनपाय मिथु
 न ३ पुनर्वसु को रुक्मपाय निष्य अश्लेषांती कर्क
 ट ४ मघ पूर्वोत्तर रोपाय सिंह ५ उत्तरा नांत्रयो
 पाय हस्त चित्रा अर्द्धकन्या ६ चित्रा को अर्द्ध स्वातिः
 विशाखा तिनपाय तुला ७ विशाखा को रुक्मपाय
 अनु अराधा ज्येष्ठांती विहा ८ मूल पूर्वोत्तर
 पाय धन ९ उत्तरा नांत्रयोपाय श्रवणा धनेष्ठा
 अर्द्धमकर १० धनेष्ठांती को अर्द्ध शतभिषा पूर्वभाद्र
 को तिनपा कुंभ ११ पूर्वभाद्र रुक्मपाय उत्तरभा
 दरेवति मीन १२ ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥

अथ नवग्रह को बान ॥ ॥ सूर्य ॥ पद्मासन
 पद्मकर पद्मगर्भ समयुति ॥ सप्तस्वरथसं
 धश्च द्विभुजस्यात्यदारवि ॥ १ ॥ चन्द्र ॥ श्वे
 तस्वेताम्बरधरोदसाश्च स्वेतभूषणागदा
 पाणिर्द्विबाहुश्च करतलो वरदशशी ॥ २ ॥
 भौम ॥ रक्तमालावरः शक्तिमुलपाणिगदा

धर॥ चतुर्भुजो मे षगमो वरदस्या धरासुत॥ ३ ॥

उध॥ पीतमाल्या वरधरकर्णिकारसमयुति॥

खड्गचर्मगदापाणि सिंहस्यो वरदो उध॥ ४ ॥

वृहस्पति॥ श्रु॥ देवदैत्यतत्पीतश्वेतो चतु

र्भुजो दण्डिणो कर्षो सांक्षसुत्रकमण्डलु॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ **शनीश्वर॥** इन्द्रनीलमुनिभूती वरदो

गृध्रवाहन॥ वारावारा शरधरकर्तृबोर्कश्रत

सदा॥ ७ ॥ **राहु॥** करालवदनखड्गचर्मभूतीः

वरदनीलसिंहासनस्थश्चराहरतप्रसस्यते॥

॥ ८ ॥ **केतु॥** भुम्रादिवाहवसर्वगदितो विक्रिता

सना॥ गृक्षासनगतो नित्यं केतवस्त्वरप्रद॥ ९ ॥

श्रुभम्॥ ॥

अथ वयविचार॥ ॥ कुमारिकां वरशशी उध

त्ववृक्षांशानि सूर्यगुरुप्रसूतां॥ स्त्रीकर्कसांभो

मसितौ च धन्नेः सववयस्यात्पुरुषोपि चैव॥

॥ १ ॥ **अस्यार्थ॥** श्रुत्वा प्रतिप्रदादेषिदशमि

समावालस्यसिद्धं सकादशिक्षयं च

मिसमत्तराङ्कं परवृधलगतमावस्थाको

रदेष्वाकोभयाकुरिहोभन्तु तसुराभयातसुरा
भन्तु वृद्धभयावृद्धभन्तु वृद्धपतिवावालस्त्री
हवस् शनिश्चरभयावृद्धहो सूर्यगुरुल्लेदेः
ष्वाकोयुक्तहोत प्रसूतिभयाकीहो॥ भौम॥ अ
॥ भयावडि कर्कसाहवस् पुरुष लाईपनि
यहिरितिलेजानु॥ ॥ इतिवयस्तानं॥ ॥

दधिचंदनराग्याखो तोयसिद्धाथरिचना॥ पि
णाकचंदनंकुर्णाद्वयदौ कार्यसिद्धयो॥ १ ॥
दहि श्रीखरासमीजलससुरिचनापिना
यातिभिन्नभिन्नचंदनवनाइसूर्यादिवार
माचन्दनलाउनु कार्यसिद्धिऊं॥ अभा॥

अले पर्वदे परादे	रुमि पर्वदे परादे
१ किलुप्र वव	१ बालव कौलव
२ बालव कौलव	२ तैतिल गर
३ तैतिल गर	३ वरिज भडा
४ वरिज भडा	४ वव बालव
५ वव बालव	५ कौलव तैतिल
६ कौरव तैतिल	६ गर वरिज
७ गर वरिज	७ भडा वव
८ भडा वव	८ बालव कौलव
९ बालव कौलव	९ तैतिल गर
१० तैतिल गर	१० वरिज भडा
११ वरिज भडा	११ वव बालव
१२ वव बालव	१२ कौरव तैतिल
१३ कौलव तैतिल	१३ गर वरिज
१४ गर वरिज	१४ भडा शकुनी
१५ भडा वव	३० चतुषद नाग

५

अथ राहुचक्रमिदम् ॥

राहु राहु राहु राहु राहु राहु राहु राहु

४ ८ १२ १६ २० २४ २८ ३२

पूर्व वाय दक्षि ईशा पश्चि आग्ने उत्त नेत्र

५

अथ वारतिथीनक्षत्राणां विषयाः ॥

सूर्य हस्त ५ विषम

सोम मृगशिर ६ विषम

मंगल अश्विनी ७ विषम

बुध अंशुशधा ८ विषम

बृहस्पति मिषा ९ विषम

शुक्र रेवति १० विषम

शनिश्वर रोहिणी ११ विषम

अथ मेषादिचन्दादीभडा निवासु.

मेषचन्दे	स्वर्गलोके	भडा
वृषचन्दे	स्वर्गलोके	भडा
मिथुनेचन्दे	स्वर्गलोके	भडा
कर्कटेचन्दे	भूलोके	भडा
सिंहेचन्दे	भूलोके	भडा
कन्याचन्दे	पाताललोके	भडा
तुलाचन्दे	पाताललोके	भडा
वृश्चिकेचन्दे	स्वर्गलोके	भडा
धनेचन्दे	पाताललोके	भडा
मकरेचन्दे	पाताललोके	भडा
कुम्भेचन्दे	भूलोके	भडा
मीनेचन्दे	भूलोके	भडा

अथ पूर्वोक्तस्थिता भडा दि ॥ ॥

निथय	दिश	भडा
चतुर्दशाम्	पूर्व	भडा
अष्टमाम्	आग्नेयां	भडा
सप्तमाम्	दक्षि	भडा
पौराणिमास्यां	नैऋति	भडा
चतुर्थ्यां	पश्चिमे	भडा
दशम्यां	वायव्य	भडा
एकादस्यां	उत्तरे	भडा
तृतीयायां	ईशाने	भडा

अथ दिने मूला

अथ रात्रौ मूला

दिने मू	१	रुद्र	रात्रौ	१	सिव
दिने मू	२	अहि	रात्रौ	२	अजय
दिने मू	३	मित्र	रात्रौ	३	अहिरुध्र
दिने मू	४	पितृ	रात्रौ	४	पृष
दिने मू	५	वसु	रात्रौ	५	अश्वि
दिने मू	६	सलिल	रात्रौ	६	अंतक
दिने मू	७	विश्व	रात्रौ	७	वह्नि
दिने मू	८	विधि	रात्रौ	८	क
दिने मू	९	विधाता	रात्रौ	९	चन्द्र
दिने मू	१०	इन्द्र	रात्रौ	१०	अदिति
दिने मू	११	इन्द्र	रात्रौ	११	इज्य
दिने मू	१२	अग्नि	रात्रौ	१२	विश्व
दिने मू	१३	निम्नाति	रात्रौ	१३	अर्क
दिने मू	१४	कप	रात्रौ	१४	त्वाष्ट
दिने मू	१५	कर्म	रात्रौ	१५	वात
दिने मू	१६	भग	रात्रौ	१६	

विश्वंभर वास्तुशास्त्रमात्रास्मात्ते विश्वकर्मात्मा
सकलजातदुष्टा इजातजातको जीविकावताया
कोमलतिहो ॥ ॥

ब्राह्मणीले आश्रुपुरुषजि उदोहं दै अकाब्राह्म
देवि जन्माया को पुत्र कुं उना उभया को दुह
विधुवा ब्राह्मणीले अकाब्राह्मरा देवि जन्माया को पु
त्र गोल कहुं इ २ जना द्विजाति देवि केहि पाहुं
पिता ब्राह्मण माता क्षत्री स्त्री इ न देवि जन्माया को
क्षत्रिय दुह

पिता ब्राह्मण माता वैश्य स्त्री इ न देवि जन्माया को अ
वह दुह वैश्य

पिता ब्राह्मण माता सुद स्त्री इ न देवि जन्माया को नि
षाद सुनार

पिता क्षत्रीय माता ब्राह्मणी इ न देवि जन्माया को सु
त दुह सवारि

पिता वैश्य माता ब्राह्मणी इ न देवि जन्माया विदेह दुह
पिता क्षत्रीय माता वैश्य स्त्री सुद स्त्री इ न देवि
जन्माया को उग्रमाहिष दुह कंदर्प शास्त्रले जून
मातमाषवास

पिता वैश्य माता सुदस्त्री इन्देवि जन्मा को कररा ऊं १०
 पिता वैश्य माता क्षत्रीय स्त्री इन्देवि जन्मा को माग वं ऊं
 ह मा ८
 पिता सुद माता क्षत्रीय स्त्री इन्देवि जन्मा को क्षता ऊं ह
 वा वा कर्म यति जात पिता को जो धर्म ह उ सै धर्म
 मार हं ११
 पिता माहिष माता करणी इन्देवि जन्मा को काठ को
 कर्म ऊं ह शुद्ध धर्म देवि यति मै सित्य शास्त्र ले जी
 विका १२
 पिता ब्राह्मण माता माहिष स्त्री देवि जन्मा को अहिर
 ऊं ह यम लेगा इ मै सिला इ यम का ह नु उ द द हि वे च १३
 पिता संस्कार न मै प्रतीत भया को ब्राह्मण माता ब्राह्म
 णी इन्देवि जन्मा को भृज्य कंठ ऊं ह १४
 पिता भृज्य कंठ माता ब्राह्मणी इन्देवि जन्मा को
 आवर्त्तक ऊं ह १५
 पिता आवर्त्तक माता ब्राह्मणी इन्देवि कंठ वावक
 ऊं ह १६
 पिता कंठ वावक माता ब्राह्मणी इन्देवि जन्मा को
 पृषसेषर ऊं ह इ चार जात ले गीत बांधी देसः
 देस का भा काले गो उदै मागिषानु १७

पितामहिष्यमाताशत्रियस्त्रीइन्देविऋरकसरिरा
जपुत्रकुंडं यस्तेरास्त्रात्रलउयिकोसराजामवनोउम १८
पितामागधमातामाहिष्यस्त्रीइन्देविनापितजन्म
पिताब्राह्मणमातासुदस्त्रीइन्देविजन्माकोसंस्कार
नभयाकोतोपनिनापितकुंडं इउइइस्तेशुरस्मश्रु
नषकर्मगर्न

पिताशत्रीयमातासुदस्त्रीइन्देविजन्माकोराज
पुत्रकुंडं यस्तेराजाकापुत्रकनरास्त्रास्त्रकोकामसिको २०

पिताराजपुत्रमाताशत्रीयस्त्रीइन्देविमध्यकुंडं य
स्तेपहलमानीकामगर्न २१

पिताविदेहमातामाहिष्यस्त्रीयेनदेविकायस्यकुंडं
तोसुददेविद्यदिकुंडं यस्तेहिसावदेसदेकालिपिः
लेजन्म २२

पिताब्राह्मणमातापुष्यसेषरस्त्रीइन्देविजन्माको
भोजककुंडं यस्तेसूर्यकाप्रतिमाकोपूजागर्न २३

पिताब्राह्मणमाताभोजकस्त्रीइन्देविदेवलककुंडं
यस्तेसंघकोपरिशारप्रतिमाकोपूजागर्नतिन
वर्षसम्मब्राह्मणादेवात्पसिपूजाप्रतिमाकोगयो
भन्यातोपनिदेवलककुंडं इस्तेइच्छेयाकुंदिसवे
लेस्नानगर्न २४

६७

पिता ब्राह्मण माता विदेह स्त्री इन्द्र देवि क्षत्रधर ऊं
 यस्मै लेखा तावता उरु पानी वेचन २५
 पिता ब्राह्मण माता निषाद स्त्री इन्द्र देवि कहर ऊं
 यस्मै डोला वो कन दा उरा वेचन दौटना कामागर्भ २६
 पिता ब्राह्मण माता भाटकी स्त्री इन्द्र देवि ताव डि
 या ऊं यस्मै देस देस का बांधि माका चोर ला
 इवंधन का घर माहाली रस्व वारिगर्भ २७
 पिता ब्राह्मण माता अंबु क स्त्री इन्द्र देवि कसाव
 ऊं यस्मै कांसा का भांडा वना उरु २८
 पिता क्षत्री माता माहिष स्त्री इन्द्र देवि तमत
 ऊं यस्मै तांवा को भांडा वना उरु २९
 पिता माहिष माता निषाद स्त्री इन्द्र देवि माली ऊं
 यो सुदर्म दा य डि ऊं यस्मै फूल वेचन ३०
 पिता सुत माता वेदेह स्त्री इन्द्र देवि यमि सुत
 ऊं हलवाई त्य स्तैष डर सर अन्न का जान
 जान का रोति वना इवेचन ३१
 पिता सुद माता वैश्य स्त्री इन्द्र देवि आयंग
 वि ऊं ३२

पिताविदेह माताआयोगवस्त्रीइन्द्रदेविमै
त्रेयकुंड यस्मत्प्रातकालमाद्यंषावजाई
सहरवासिकनविउफाउनु

पिताविदेह माताअंवहस्त्रीइन्द्रदेवि वै
राकुंड योसुददेवि यठिउंड यस्मत्प्रात
र्यदेवाई नायगनु

पितामागध मातामाहिषस्त्री इन्द्रदेविवादि
कुंड यस्मत्प्रातगाउनुवजाउनु

पिताकायस्थ माताआयोगवस्त्रीइन्द्रदेविम
र्दनीकुंड यस्मत्प्रातललाइदिनु केशवनाइ
दिनुसवैका पाउधोइदिनु

पितानिषाद मातामाहिषइन्द्रदेविजाविकुंड
कुंड यस्मत्प्रातचिठिलीदेसदेसमादौउनु

सिवव्रतदेविभ्रह्मभैसुन्दकिस्त्रीसंगगरो
भन्ना त्यसुदेविभस्माकुरकुंड तेसलेसि
वनिर्मात्य बांड़ीजीविकागनु

सरदारकारजपूतकोजाल निनुत हकोतपसील

विसेन ————— १

मोहिकासूर्यवंसी ————— २

मर्नेत ————— ३

मोसिक ————— ४

वधेल ————— ५

मयनूरिचोहात ————— ६

कलहंस ————— ७

नागवंसी ————— ८

गहवार ————— ९

वैसवांडेकावैस ————— १०

कनूरिया ————— ११

नगरकागोतम ————— १२

तदेल ————— १३

राजकुवार ————— १४

रघुवंसी ————— १५

मोमवंसी ————— १६

पध्रजात

बांधलगोत्री ————— १

वत्सगोत्री ————— २

गगगोत्री ————— ३

हरिहोवंश ————— ४

उजयनर ————— ५

सकवार ————— ६

सुलकि ————— ७

हनवार ————— ८

पुवार ————— ९

सेगर ————— १०

गंधौरिया ————— ११

पलिवार ————— १२

कछवाहा ————— १३

वेरुवार ————— १४

महर्वड ————— १५

अथ सर्वतोभद्रचक्रमाह ॥ पूर्वोद्विचीलिखातीर्न
यन्यगारिताकंदकोद्वेष्टार्थशात्करोस्ति यस्वरावस
दगालिमुभायंतरात् नारिवरानुरोक्तान
राज्यसंवादि खेगसंवंधिवारैः स
दि १ ॥ रोडादिम
वत्तद्विद्वत्कमशं घउद्धा

अथामितिसर्वतोभद्र २ ॥
करोंगत्वाथवामशिघ्रोविधोद्विभनेप्रे
सनस्तु निश्ववक्रौराडुकेतुइनेदु निश्वसिघ्रो
द्विधोनुत्पश्यै ३ ॥ उद्वेगार्थविनाशरोगमृति
शविध्नस्तकादशयोवरोहानिरुदौभ्रमोवितुर
जोविद्धेतिथौभिरपि ॥ राशौविध्नततिश्रपंचसु
मृतिविध्ननृजइज्यलितप्रस्थासर्वसुखेरतिवि
दधत्तेवक्राअतिष्ठाइमे ४ ॥ अष्टाशास्त्राजायै
नूरवधवत्फलंवाच ॥ उदिताशास्थंमौम्यवः
धइवफलमादिसेकुष्ठं ५ ॥ हानिरुक्कलहो
पिपीडितइहस्याजनेऽस्मान्नयेकमासिद्धिरथो
भिदाचयमितेइवक्षस्याजये ॥ गौरेदेहरुजस

रेसुखहतिराजोयदेशोडनिशुरोजात्यभिषेकयो
रपिभयोस्तद्वदभयनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥ ॥ ॥

ज्येष्ठस्यप्रथमेयक्षेप्रतिपद्यांयदाभवेत् ॥ रविवार
स्तदावायुर्महादृक्षात्तदाठक ॥ १ ॥ अथज्येष्ठस्य
मौमेवधेडुर्मिशकार ॥ २ ॥ सोम ॥ ३ ॥ सोम
कूपेनदृश्यते ॥ २ ॥ सोम ॥ ३ ॥ सोम
रःप्रजायते ॥ धनधान्यसुतोत्पत्तिग ॥ ४ ॥ सोम
वे ॥ ३ ॥ इति संक्षेपवारफलम् ॥

ज्येष्ठमासेसितेयक्षेत्त्रादौदशतारका ॥ सज
लानिर्जलागेयानिर्जलासजलाभवेत् ॥ १ ॥

अ	इ	ते	म	आ	उ	ति	अ	आ
अ	इ	अ	व	क	ह	उ	म	म
अ	ल	ह	मि	क	ल	स	म	म
रे	व	मे	ओ	नंदा	ओ	मि	ह	उ
उ	द	मि	रिक्ता	पुर्ता	पुर्ता	कं	प	ह
पू	श	ऊं	अ	जया	अ	तु	र	रि
श	ग	ह	म	ध	वि	ह	त	ला
ध	ह	म	ज	म	य	न	ह	वि
ई	अ	अभि	उ	ह	म	शे	अ	ह

॥ दमः ॥ ॥ यानि मध्यमानि ॥ आर्द्रा हि स्तपूर्वा
॥ ॥ रव्यानि ॥ सतेषा यच्चतुष्टयं तस्य वेध
क्रमेण यत्तु द्वात्रिंशत्वारणां वर्णानां तथा तु न
॥ ॥ जथा द्वादश वर्णानां वेधमादिशेत्तु कथ
यत्तु ॥ ॥ स्वरशास्त्रवित् ॥ तद्वद्वर्णविधेः सप्तदादी
नां माक्षरवेधस्यात् इत्यमुना प्रकारेण सर्वतोभङ्ग
वेधकृतज्ञेयां ॥ ॥ प्रथमं भभरणी अग्नं भक्तं नि
का तथा श्लेषामयेत्यादि तत्र स्थित भरणी चतु
र्थचरणा कृतिका यच्चरास्त्रित खेठ कोरा स्थिता
श्चतुरस्थराणां ॥ अर्द्रा इह रूपान् विधेत्तु पूर्णानि
त्रिमध्यलिखितां सयेव विधेत्तु सच वेध क्रूरज
क्रूरक्रूरग्रहकृतौ न शुभ शुभकारि न स्यात् कि
न्त्वनिष्ट ॥ शुभग्रहकृतस्तु वेध शुभद क्रूरग्रहा
रविशीरा चन्द्र भौम क्रूरयुत सौम्यशनि राहु के
तवस्तदन्त्यौ शुभौ ॥ ॥ अथार्द्रे न वक्रशिष्य
हवेधमाह ॥ वक्रौ वक्रगतिग्रहे वक्रगतिस्तच्च स
र्यस्वस्थाना त्वंच मे षष्ठे स्थानो वा स्थिते स्यात् स शु
भो शुभो वा कर्णा गत्वा कोरारीत्यादक्षस्वयश्चाद्भागं
विधेत्तु ॥ अथ शिष्यगतिग्रहो वामं स्वाग्निमभाव

कोरासीयेव विधीतः। शिष्यगतिश्च। अर्कद्वितीय
 स्थानगेसमसमगतिस्तुम्हः। अर्कद्वितीयसुखेन
 ईक्षते। अतः संमुखे सवतदृष्टिरूपो वेधः॥ अथ
 नियतवशीद्युग्रहाणाह॥ निश्चयित्यर्कना॥
 राहुकेतुनिसर्वकालेव कौप्रतिपगतीभवतः॥
 अतो नयोर्दक्षसकारागत्यावेधः। रविन्दुनित्यशीघ्र
 गतिः अतो वयोश्च वामरेव वेधः। दृक्वेधो दृष्टि
 वेधे तु ल्यरूपो सर्वकाले समानफलावेव नात्य
 थाभवतः॥ उद्देगश्चित्रवैराग्यं। अर्थनाशोधन
 धंसः। रोगोज्वरादिः। मृतिमरणास्तानि फला
 लानि सकादयो ग्रहाविधां तोददंति। एक उद्दे
 गं। क्षौधननाशं। त्रयो रोगं। चत्वारो ग्रहाविधा
 नो मरणां प्रयच्छंति विशेषमाह॥ वरा
 इति॥ वरौ नामाभ्यक्षरैः ग्रहेणाविध्यहानिर्वसु
 नाशः। उडौ जनाक्षविधभ्रमः चित्रविक्षयः॥
 अविवर्णास्वरे विधरुजो रोगा भवन्ति। त्रिथौ
 जन्मसंवन्धिनिविद्धे निर्मयः। राशौ जन्मराशौ
 विधे विघ्नततिविघ्नं परंपरास्मात्॥ पंचसु

वरानि क्षत्रस्वरतिथिराशिषु विद्वेषु मतिर्मरणां
 भवेत्। विधन्तु वै व कुर्वन्ता जो व धं ई ज्यो गुरु सि
 तश्रु क्र स ते विधत् क्रमात् प्र ज्ञा वुद्धि सर्व सु
 खं सर्व विषयकं सुखं रतिं च वुधाया विंदधते
 कुर्वन्ति। इ मे वुध गुरु श्रु का व क्र स तो अ त्व तं ई
 दा सौ भ त्वात् ॥ ॥ क्र रा शी रा च डा क श नि भौ
 म रा ज के त व स ते व क्र रा तो स त्वा अ ति व डु द्वा
 अ न्य त मु नि ष्ट फ ल दा इ त्थ र्थ। र वि य स्मी न रा सौ
 य णि क लि खि ते षु रा शि षु स्था त्। य था प्रा च्या चू
 ष मि थु न क र्क णः। लि खि ता स्ते षां म ध्ये चे दे क स्मि
 न श शौ ति ष्टे त दा सा प्रा च्या दि दि क श नि स्था दि शि
 भ वं दि श्य न क्ष त्र स्वर व रा रा शि ति थि वा रा दि
 ते न स ह व र्त्त ते स दि श्या स्त मे ति। न क्ष त्रा ध्ये य
 का सा दि ग स्त ग ता स्या दि त्थ र्थ। वि दि शु य स्वे रा
 या स्ते क थ म स्त ग ता ज्ञे या इ त्थ ये शा या वि दि शां
 दि श्वे वां त भा व मा ह ॥ ॥ प्रा च्या इ त्या दि ॥ ॥
 इ शा शा स्थि ता शेषा नि स्थि ता अ च प्रा च्या प्रा ची
 दि क स्थि ता ज्ञे या ॥ अ य क्र मः। स र्वा सा सु स र्व
 दि शु वु द्धि म द्धि जा य ता त था आ ग्ने य स्थि ता

अ वो द क्षिणादि क स्थिता ज्ञेयाः नैऋतिगता प्र
 तीची गता ज्ञेया वायवस्था उ दी ची गता ज्ञेया ॥
 अष्टासासूर्याक्रान्तादि क तस्या स्थिते रजायै स्व
 रवरातिथि वार प्रलतिभिः क्रूर बध वतु क्रू
 र ग्रह वेध वत दुष्ट फल वाचा ॥ उदिताशासूर्या
 क्रान्तिदिग्वतिरिक्ता तस्या स्थितेः स्वरायैः सौः
 म्य ग्रह वेध इव समीचीन फल ॥ उदिताशा
 स्या रुच सत्फल वाचा ॥ अस्थाशासत्फला अथ
 सत्फल ॥ उदिताशास्या रुच सत्फला अपि स
 त्फला इत्यर्थः ॥ ॥ इति ह स र्वतो भेद चक्र
 म् ॥ ॥ इह स र्वतो भेदे चक्रे जन्म नक्षत्रे
 चान्नये दशमक्षयीदिते कर्मा सिद्धिः । कर्म
 चयत कर्तु मिष्ट तस्या सिद्धिः ॥ अथोचयमि
 ते जन्म भाव्योऽश संख्या कर्मे विद्धे मिदा चेष्ट
 वर्गे रास ह भेदः परस्पर मविद्या स्तना भवे
 त् । जये दश संख्या तु भे विद्धे द ब शयः स्या
 त् । गौरे त्रयो विंशति त मे विद्धे देह रजः । शरि
 रोगे द्वयः । शरे पंच विंशति त मे विद्धे सु
 ख हतिः । सुख नाशः । अथ राजो देशोऽनु नि अवक
 रुच चक्रे ये तु देशे नक्षत्रे तस्मिन् सुतोपीडिते

विदो। तथा जाते मिषे कयो जाति शत्रीय
वादि स्तद्ध अवक हउ चक्र जम् ॥ अवक
हउ चक्र मेव यदा जा मिषे क कालि नना
मभं सते ष विदु य न संधि नादि या जाः
निरा ज्ञानां भयं निर्दिशेत् ॥ ५॥ ॥

नम	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१	१	५	१४	२०	२५	३१	३९	४	११	१७	२०	२५	२८
२	५	१०	१९	२५	३०	३६	४०	५	१२	१८	२१	२६	२९
३	१०	१५	२४	३०	३५	४१	४५	१०	१७	२३	२६	३१	३४
४	१५	२०	२९	३५	४०	४६	५०	१५	२२	२८	३१	३६	३९
५	२०	२५	३४	४०	४५	५१	५५	२०	२७	३३	३६	४१	४४
६	२५	३०	३९	४५	५०	५६	६०	२५	३२	३८	४१	४६	४९
७	३०	३५	४४	५०	५५	६१	६५	३०	३७	४३	४६	५१	५४
८	३५	४०	४९	५५	६०	६६	७०	३५	४२	४८	५१	५६	५९
९	४०	४५	५४	६०	६५	७१	७५	४०	४७	५३	५६	६१	६४
१०	४५	५०	५९	६५	७०	७६	८०	४५	५२	५८	६१	६६	६९

जेष्ठदिनादशनिदिनमासां॥							तत्त्वमानं॥						
सप्त	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
१	२	७	१३	१८	२५	३०	३६	२	८	१३	१८	२३	२५
२	३	८	१४	१९	२६	३१	३७	३	९	१४	१९	२४	२६
३	४	९	१५	२०	२७	३२	३८	४	१०	१५	२०	२५	२७
४	५	१०	१६	२१	२८	३३	३९	५	११	१६	२१	२६	२८
५	६	११	१७	२२	२९	३४	४०	६	१२	१७	२२	२७	२९
६	७	१२	१८	२३	३०	३५	४१	७	१३	१८	२३	२८	३०
७	८	१३	१९	२४	३१	३६	४२	८	१४	१९	२४	२९	३१
८	९	१४	२०	२५	३२	३७	४३	९	१५	२०	२५	३०	३२
९	१०	१५	२१	२६	३३	३८	४४	१०	१६	२१	२६	३१	३३
१०	११	१६	२२	२७	३४	३९	४५	११	१७	२२	२७	३२	३४
११	१२	१७	२३	२८	३५	४०	४६	१२	१८	२३	२८	३३	३५
१२	१३	१८	२४	२९	३६	४१	४७	१३	१९	२४	२९	३४	३६
१३	१४	१९	२५	३०	३७	४२	४८	१४	२०	२५	३०	३५	३७
१४	१५	२०	२६	३१	३८	४३	४९	१५	२१	२६	३१	३६	३८
१५	१६	२१	२७	३२	३९	४४	५०	१६	२२	२७	३२	३७	३९
१६	१७	२२	२८	३३	४०	४५	५१	१७	२३	२८	३३	३८	४०
१७	१८	२३	२९	३४	४१	४६	५२	१८	२४	२९	३४	३९	४१
१८	१९	२४	३०	३५	४२	४७	५३	१९	२५	३०	३५	४०	४२
१९	२०	२५	३१	३६	४३	४८	५४	२०	२६	३१	३६	४१	४३
२०	२१	२६	३२	३७	४४	४९	५५	२१	२७	३२	३७	४२	४४
२१	२२	२७	३३	३८	४५	५०	५६	२२	२८	३३	३८	४३	४५
२२	२३	२८	३४	३९	४६	५१	५७	२३	२९	३४	३९	४४	४६
२३	२४	२९	३५	४०	४७	५२	५८	२४	३०	३५	४०	४५	४७
२४	२५	३०	३६	४१	४८	५३	५९	२५	३१	३६	४१	४६	४८
२५	२६	३१	३७	४२	४९	५४	६०	२६	३२	३७	४२	४७	५०
२६	२७	३२	३८	४३	५०	५५	६१	२७	३३	३८	४३	४८	५१
२७	२८	३३	३९	४४	५१	५६	६२	२८	३४	३९	४४	४९	५२
२८	२९	३४	४०	४५	५२	५७	६३	२९	३५	४०	४५	५०	५३
२९	३०	३५	४१	४६	५३	५८	६४	३०	३६	४१	४६	५१	५४
३०	३१	३६	४२	४७	५४	५९	६५	३१	३७	४२	४७	५२	५५
३१	३२	३७	४३	४८	५५	६०	६६	३२	३८	४३	४८	५३	५६
३२	३३	३८	४४	४९	५६	६१	६७	३३	३९	४४	४९	५४	५७
३३	३४	३९	४५	५०	५७	६२	६८	३४	४०	४५	५०	५५	५८
३४	३५	४०	४६	५१	५८	६३	६९	३५	४१	४६	५१	५६	५९
३५	३६	४१	४७	५२	५९	६४	७०	३६	४२	४७	५२	५७	६०
३६	३७	४२	४८	५३	६०	६५	७१	३७	४३	४८	५३	५८	६१
३७	३८	४३	४९	५४	६१	६६	७२	३८	४४	४९	५४	५९	६२
३८	३९	४४	५०	५५	६२	६७	७३	३९	४५	५०	५५	६०	६३
३९	४०	४५	५१	५६	६३	६८	७४	४०	४६	५१	५६	६१	६४
४०	४१	४६	५२	५७	६४	६९	७५	४१	४७	५२	५७	६२	६५
४१	४२	४७	५३	५८	६५	७०	७६	४२	४८	५३	५८	६३	६६
४२	४३	४८	५४	५९	६६	७१	७७	४३	४९	५४	५९	६४	६७
४३	४४	४९	५५	६०	६७	७२	७८	४४	५०	५५	६०	६५	६८
४४	४५	५०	५६	६१	६८	७३	७९	४५	५१	५६	६१	६६	६९
४५	४६	५१	५७	६२	६९	७४	८०	४६	५२	५७	६२	६७	७०
४६	४७	५२	५८	६३	७०	७५	८१	४७	५३	५८	६३	६८	७१
४७	४८	५३	५९	६४	७१	७६	८२	४८	५४	५९	६४	६९	७२
४८	४९	५४	६०	६५	७२	७७	८३	४९	५५	६०	६५	७०	७३
४९	५०	५५	६१	६६	७३	७८	८४	५०	५६	६१	६६	७१	७४
५०	५१	५६	६२	६७	७४	७९	८५	५१	५७	६२	६७	७२	७५
५१	५२	५७	६३	६८	७५	८०	८६	५२	५८	६३	६८	७३	७६
५२	५३	५८	६४	६९	७६	८१	८७	५३	५९	६४	६९	७४	७७
५३	५४	५९	६५	७०	७७	८२	८८	५४	६०	६५	७०	७५	७८
५४	५५	६०	६६	७१	७८	८३	८९	५५	६१	६६	७१	७६	७९
५५	५६	६१	६७	७२	७९	८४	९०	५६	६२	६७	७२	७७	८०
५६	५७	६२	६८	७३	८०	८५	९१	५७	६३	६८	७३	७८	८१
५७	५८	६३	६९	७४	८१	८६	९२	५८	६४	६९	७४	७९	८२
५८	५९	६४	७०	७५	८२	८७	९३	५९	६५	७०	७५	८०	८३
५९	६०	६५	७१	७६	८३	८८	९४	६०	६६	७१	७६	८१	८४
६०	६१	६६	७२	७७	८४	८९	९५	६१	६७	७२	७७	८२	८५
६१	६२	६७	७३	७८	८५	९०	९६	६२	६८	७३	७८	८३	८६
६२	६३	६८	७४	७९	८६	९१	९७	६३	६९	७४	७९	८४	८७
६३	६४	६९	७५	८०	८७	९२	९८	६४	७०	७५	८०	८५	८८
६४	६५	७०	७६	८१	८८	९३	९९	६५	७१	७६	८१	८६	८९
६५	६६	७१	७७	८२	८९	९४	१००	६६	७२	७७	८२	८७	९०
६६	६७	७२	७८	८३	९०	९५	१०१	६७	७३	७८	८३	८८	९१
६७	६८	७३	७९	८४	९१	९६	१०२	६८	७४	७९	८४	८९	९२
६८	६९	७४	८०	८५	९२	९७	१०३	६९	७५	८०	८५	९०	९३
६९	७०	७५	८१	८६	९३	९८	१०४	७०	७६	८१	८६	९१	९४
७०	७१	७६	८२	८७	९४	९९	१०५	७१	७७	८२	८७	९२	९५
७१	७२	७७	८३	८८	९५	१००	१०६	७२	७८	८३	८८	९३	९६
७२	७३	७८	८४	८९	९६	१०१	१०७	७३	७९	८४	८९	९४	९७
७३	७४	७९	८५	९०	९७	१०२	१०८	७४	८०	८५	९०	९५	९८
७४	७५	८०	८६	९१	९८	१०३	१०९	७५	८१	८६	९१	९६	९९
७५	७६	८१	८७	९२	९९	१०४	११०	७६	८२	८७	९२	९७	१००
७६	७७	८२	८८	९३	१००	१०५	१११	७७	८३	८८	९३	९८	१०१
७७	७८	८३	८९	९४	१०१	१०६	११२	७८	८४	८९	९४	९९	१०२
७८	७९	८४	९०	९५	१०२	१०७	११३	७९	८५	९०	९५	१००	१०३
७९	८०	८५	९१	९६	१०३	१०८	११४	८०	८६	९१	९६	१०१	१०४
८०	८१	८६	९२	९७	१०४	१०९	११५	८१	८७	९२	९७	१०२	१०५
८१	८२	८७	९३	९८	१०५	११०	११६	८२	८८	९३	९८	१०३	१०६
८२	८३	८८	९४	९९	१०६	१११	११७	८३	८९	९४	९९	१०४	१०७
८३	८४	८९	९५	१००	१०७	११२	११८	८४	९०	९५	१००	१०५	१०८
८४	८५	९०	९६	१०१	१०८	११३	११९	८५	९१	९६	१०१	१०६	१०९
८५	८६	९१	९७	१०२	१०९	११४	१२०	८६	९२	९७	१०२	१०७	११०
८६	८७	९२	९८	१०३	११०	११५	१२१	८७	९३	९८	१०३	१०८	१११
८७	८८	९३	९९	१०४	१११	११६	१२२	८८	९४	९९	१०४	१०९	११२
८८	८९	९४	१००	१०५	११२	११७	१२३	८९	९५	१००	१०५	११०	११३
८९	९०	९५	१०१	१०६	११३	११८	१२४	९०	९६	१०१	१०६	१११	११४
९०	९१	९६	१०२	१०७	११४	११९	१२५	९१	९७	१०२	१०७	११२	११५

भाइ दिनेदयानिदिनमान										शरमा नं॥				
लग्न	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१	२	३	४	५
१	५	११	१७	२३	२९	३२	३३	३	७	११	१५	२१	२७	२७
	४६	२२	१६	४	२३	५१	५२	४७	२०	१४	५३	२०	९	६
२	५	११	१७	२३	२९	३२	३३	३	७	११	१५	२१	२७	२७
	३५	१६	५	५३	१२	६०	४६	३२	१२	६	४५	१२	९	१२
३	५	११	१६	२२	२९	३२	३३	३	७	१०	१५	२१	२६	२७
	२३	७	५४	४२	९	२२	४४	३१	४	५६	३७	४	५३	१६
४	१०	१६	२२	२७	३२	३३	३	६	१०	१५	२०	२६	२७	२७
	१०	५६	४३	३१	५०	१६	४०	२३	५६	५०	२०	५६	४७	२०
५	५	१०	१६	२२	२७	३२	३३	३	६	१०	१५	२०	२६	२७
	१	४४	३१	२०	३६	६	३२	१५	४६	४२	२१	४६	३७	२३
६	४	१०	१६	२२	२७	३१	३२	३	६	१०	१५	२०	२६	२७
	५०	३७	२०	६	२७	५५	३०	७	४०	३४	१३	४०	२२	२७
७	४	१०	१६	२१	२७	३१	३२	३	६	१०	१५	२०	२६	२७
	३०	२२	६	५७	१६	४४	२०	०	३३	२७	६	३२	२२	३०
८	४	१०	१५	२१	२७	३१	३२	२	६	१०	१४	२०	२६	२७
	२०	११	५६	४६	५	३३	२६	५२	२५	१६	५६	२५	१४	३३
९	४	१०	१५	२१	२६	३१	३२	२	६	१०	१४	२०	२६	२७
	१६	५०	४४	३४	५३	२१	२६	४४	१७	११	५०	१७	६	३६
१०	४	१०	१५	२१	२६	३१	३२	२	६	१०	१४	२०	२५	२७
	७	४६	३४	२३	४२	१०	२२	३६	५	३	४२	५	५६	३६
११	३	१०	१५	२१	२६	३०	३२	२	६	१०	१४	२०	२५	२७
	५४	३३	२४	१२	११	५०	१६	२६	१	५५	३४	१	५०	४३
१२	३	१०	१५	२१	२६	३०	३२	२	५	१०	१४	२०	२५	२७
	४७	२६	१३	१	२०	४६	१४	२०	५३	४७	२६	५३	४२	४६
१३	३	१०	१५	२०	२६	३०	३२	२	५	१०	१४	२०	२५	२७
	३४	१४	१	४२	६	३६	१०	१२	४५	३२	१६	४५	३४	५०
१४	३	१०	१४	२०	२५	३०	३२	२	५	१०	१४	२०	२५	२७
	२२	५	५०	३६	५७	२५	६	५	३६	३२	११	३६	२७	५२
१५	३	१०	१४	२०	२५	३०	३२	१	५	१०	१४	२०	२५	२७
	१०	५२	२६	२६	४६	१४	४	५६	३७	२५	४	३०	२०	५६
१६	२	१०	१४	२०	२५	३०	३२	१	५	१०	१३	१५	२५	२७
	५६	४१	२६	१६	३१	३	१	५१	२४	१६	५७	२४	१३	५६

५९

भाद्रपदीदिनोदयानिदिनमान							शरदमान							
लाग	५	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१	२	३	४	५
१७	२	८	१४	२१	२५	२९	३१	१	५	९	१३	१७	२५	२९
	४७	३०	१७	५	१४	५२	५६	४४	३७	११	५०	१७	६	४
१८	२	८	१४	२०	२५	२९	३१	१	५	९	१३	१७	२४	२९
	३६	३०	६	५४	१३	४१	५२	३६	१०	४	४३	१०	५२	६
१९	२	८	१३	२०	२५	२९	३१	१	५	९	१३	१७	२४	२९
	२५	८	५५	४३	२	३०	४६	३०	३	५७	३६	३	५२	१४
२०	२	७	१३	२०	२४	२९	३१	१	४	८	१३	१६	२४	२९
	१४	५७	४४	३२	५१	१०	४४	२४	५७	५१	३०	५७	४६	१६
२१	२	७	१३	२०	२४	२९	३१	१	४	८	१३	१६	२४	२९
	३	४६	३३	२१	४०	८	४०	१७	५०	४४	२३	४७	३५	२०
२२	१	७	१३	२०	२४	२९	३१	१	४	८	१३	१६	२४	२९
	५१	३४	२१	९	२६	५६	३६	१०	४३	३	१६	४३	२७	११
२३	१	७	१३	१९	२४	२९	३१	१	४	८	१३	१६	२४	२९
	४७	२३	१०	५६	१७	४५	३१	३	३६	२१	९	३४	२५	३०
२४	१	७	१२	१९	२४	२९	३१	०	४	८	१३	१६	२४	२९
	३०	१२	५५	४७	६	३४	२७	५६	२०	२३	२	२५	१६	१४
२५	१	७	१२	१९	२४	२९	३१	०	४	८	१२	१६	२४	२९
	२०	१	३०	४०	६	३०	२३	५४	२१	१३	५२	१५	१२	३७
२६	१	६	१२	१९	२३	२९	३१	०	४	८	१२	१६	२४	२९
	७	५०	३६	२५	५४	१४	१६	४२	१५	९	४६	१५	४	४३
२७	०	६	१२	१९	२३	२९	३१	०	४	८	१२	१६	२३	२९
	५६	३०	२६	१४	३३	१	१४	३५	८	२	४१	८	५७	४६
२८	०	६	१२	१९	२३	२९	३१	०	४	७	१२	१६	२३	२९
	४५	२९	१५	३	२२	५०	८	२६	१	५५	३४	१	४०	५२
२९	०	६	१२	१८	२३	२९	३१	०	३	७	१२	१७	२३	२९
	३३	१६	१०	५१	१०	३६	४	२१	५४	४४	२७	५४	४३	५८
३०	०	६	११	१८	२२	२९	३१	०	४	७	१३	१७	२३	२९
	२२	५	५२	४०	५५	३०	०	१४	५७	४६	२०	४७	३६	०
३१	०	५	११	१८	२२	२९	३०	०	३	७	१२	१७	२३	२९
	१५	५४	४०	५५	४०	१६	५६	७	४०	३४	१३	४०	२४	१५
३२	०	४	११	१८	२२	२९	३०	०	३	७	१२	१७	२३	२९
	१७	४६	३०	४६	४०	७	५२							